वट वृक्ष –8

उत्तर पुस्तिका

Harbour Press®
INTERNATIONAL

1

इकाई-I (वसंत)

यह धरती कितना देती है!

(अभ्यास-उत्तर)

काव्य-बोध

Page-10 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. कवि ने बचपन में लोभ के वशीभूत होकर पैसे बोए थे।

2. कवि ने सेम के बीजों को मणि-माणिक कहा है।

3. कवि धरती के इस महत्व को नहीं समझ सका कि धरती में जैसा बीज हम बोते हैं, वैसा ही काटते भी हैं।

4. कवि धरती में सच्ची समानता, जनता की क्षमता तथा मानव ममता के दाने बोना चाहता है। वह ऐसा इसलिए करना चाहता है क्योंकि इनसे उत्पन्न शक्ति की फलियों को लोगों तक पहुँचाकर मानवता का विकास होगा, इस प्रकार मनुष्य का श्रम सार्थक होगा।

5. सुनहली फसलों से कवि का आशय उन फसलों से है जो मानवता की भावना उत्पन्न कर सकें। धरती में सच्ची समता, जन की क्षमता तथा मानव ममता के दाने बोए जाने पर वह सुनहली फसलें उगलेगी।

(लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. स   2. ब

3. स   4. अ

Page-11

ख. 1. कविता का शीर्षक है-यह धरती कितना देती है!

2. इस कविता के कवि सुमित्रानंदन पंत हैं।

3. बाल्यावस्था में कवि ने लोभवश गलत बीज बोए थे ताकि पैसों के पेड़ उगेंगे और वह धनवान सेठ बन जाएगा।

4. संध्या के समय टहलते हुए कवि ने यह देखा कि यों ही उँगली से सहलाकर मिट्टी में डाले गए बीजों से छोटे-छोटे तथा नए-नए पौधे निकले हुए हैं।

5. धरती को बंध्या कहने वाला कवि अंत में धरती को रत्न प्रसविनी इसलिए कहने लगा क्योंकि पहले उसने गलत बीज बोए थे तथा बाद में जब सेम के सही बीज बोए गए तो उसमें से सेम के छोटे-छोटे पौधे निकले। अर्थात् हम जीवन में जिस तरह के कार्य करेंगे हमें उसी प्रकार का प्रतिफल भी प्राप्त होगा।

6. इस कविता के माध्यम से कवि यह संदेश देना चाहता है कि मनुष्य धन के लोभ में पड़कर उच्च मानवीय गुणों को भूल चुका है। कवि ने पैसे बोने की बात से समाज के दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया है। कवि इस दृष्टिकोण के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए कहता है कि पैसा स्वार्थ और लोभ का प्रतीक है। इससे समाज और राष्ट्र का कल्याण संभव नहीं है। यह निश्चित है कि हम जैसा बोएँगे वैसा ही पाएँगे। यदि धरती में हम ममता, समानता, भाईचारे के बीज बो दें तो मानवता मुसकरा उठेगी। मनुष्य की मेहनत का प्रतिफल मानवता के रूप में प्राप्त होगा। इस प्रकार सभी दिशाओं में श्रम की महत्ता मुसकराने लगेगी।

ग. 1. उक्त पंक्ति से कवि का आशय यह

है कि अनुचित बीज बोने के उपरांत उससे किसी प्रकार के प्रतिफल की आशा करना मूर्खता होती है। कवि ने भी ज़मीन में पैसों को बोया था किंतु उनसे पेड़ न निकलने पर वह हताश हो गया था क्योंकि उसने लोभवश ऐसा किया था।

2. कवि द्वारा उचित बीज बोने का सुखद भाव बताते हुए कवि यह बताना चाहता है कि पौधों में आए छोटे-छोटे पत्तों को देखकर उन्हें वे विजय के ध्वज लग रहे थे। अतः व्यक्ति को सदैव अच्छे कर्म करते रहने चाहिए।

3. इस पंक्ति से कवि का आशय यह है कि व्यक्ति को सदैव ऐसे कार्य करते रहना चाहिए जैसा फल वह प्राप्त करना चाहता है। जिस प्रकार के बीज वह बोएगा अर्थात्, कर्म करेगा उसी प्रकार के फल की प्राप्ति उसे होगी। बचपन में पैसे बोने की भूल स्वीकार करते हुए कवि ने ऐसा माना।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

Page-12

क. 1. छुटपन, तृष्णा, लालसा, विस्मय, उल्लास, गर्व, ममता, सपने, हर्ष, स्मरण, क्षमता।

ख.

मधुर-फसलें	गीली-तह
मोटा-सेठ	बौने-पौधे
बंध्या-मिट्टी	सच्ची-समता

ग. 1. मिट्टी में मिलना (अपने जवान पुत्र की मृत्यु की खबर सुनकर माता-पिता के सभी सपने जैसे धूल हो गए।)

2. हृदय से स्वागत करना। (महात्मा जी के आगमन पर भक्तों ने उनके स्वागत में आँखें बिछा दीं।)

3. इंतज़ार करना (दफ़्तर से आने में देरी होने पर रीमा अपने पति की बाट जोहने लगी।)

घ. 1. रीत, गीत, शीत

2. मन, जन, धन

3. आता, जाता, खाता

4. न्यारे, सारे, आरे

5. जाने, माने, गाने

6. टोने, सोने, होने

7. छोटा, लोटा, कोटा

8. फूल, मूल, झूल

ङ. 1. छ् + उ + ट् + अ + प् + अ + न् + अ

2. ल् + आ + ल् + अ + स् + आ

3. म् + इ + ट् + ट् + ई

4. स् + ं + ध् + य् + आ

5. स् + व् + आ + र् + थ् + अ

Page-13 (कौशल-परीक्षण)

1. धरती को माँ इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसे जीवनदायिनी के रूप में देखा जाता है। हम हमेशा से ही धरती को माँ के रूप में देखते आए हैं। जब हम धरती में कोई बीज बोते हैं तो उसमें से एक जीवन फूटता है। धरती में कई सारे पौधों, फसलों आदि की पैदावार होती है तथा उसने व्यक्ति को सदैव देना सीखा है उसके बदले में वह कुछ लेती नहीं, इसलिए उसे माँ की संज्ञा दी जाती है। एक माँ बच्चे को जन्म देकर उसका पालन-पोषण जीवन भर करती है किंतु उसके बदले में किसी प्रकार की लालसा की अपेक्षा नहीं करती। यही कारण है कि दोनों को एक-समान माना गया है।

2. धरती मनुष्य एवं सभी प्रकार के जीव-जंतुओं का घर है। प्राकृतिक रूप से इसमें वे सभी

तत्व विद्यमान हैं जो मनुष्य के जीवन के लिए आवश्यक हैं। जैसे-जैसे मनुष्य का विकास होता गया उसने अपने निवास-स्थान हेतु धरती में बदलाव लाना प्रारंभ कर दिया तथा प्रकृति का संतुलन बिगाड़ दिया। मनुष्य ने विकास एवं प्रगति के नाम पर धरती को उजाड़ना एवं पेड़-पौधे काटने प्रारंभ कर दिए। इमारतों के बनने से हरे-भरे जंगल खत्म होने लगे।

धरती को स्वच्छ रखकर ही हम अपने जीवन को सुचारू रूप से चला सकते हैं। हमारी पूरी धरती ही हमारा घर है। अगर हम अपने घर को साफ़-सुथरा रख सकते हैं तो अपनी धरती को क्यों नहीं। यदि हम किसी स्थान को साफ़-सुथरा नहीं रख सकते तो हमें उसे गंदा करने का भी कोई अधिकार नहीं है।

दूसरों को जागरूक करने के लिए हम निम्न प्रयास कर सकते हैं–

- यदि हम सभी स्थानों को अपना समझें तो हम किसी स्थान पर गंदगी नहीं फैलाएँगे।
- किसी भी कार्य को राष्ट्र स्तर पर पूरा करने के लिए सभी की भागीदारी अहम् होती है। इसलिए हम सभी को यदि घर, गाँव, देश आदि को स्वच्छ और सुंदर बनाना है तो सबसे पहले सभी लोगों को इसके प्रति जागरूक होना पड़ेगा।
- सार्वजनिक स्थलों पर खाने-पीने की चीज़ें खरीदकर उनके कूड़े को हम उसी स्थान पर न फेंकें। इसके लिए हमें कूड़ेदान का प्रयोग करना चाहिए।
- घर से निकलने वाली नालियों को ढककर रखना चाहिए क्योंकि इन नालियों से गंदे कीड़े तथा अनेक प्रकार के मच्छर पैदा होते हैं जिससे गंदगी उत्पन्न होती है।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. भूमि प्रदूषण

भूमि के भौतिक, रासायनिक या जैविक गुणों में कोई ऐसा अवांछनीय परिवर्तन जिसका प्रभाव मानव तथा अन्य जीवों पर पड़े या जिससे भूमि की गुणवत्ता तथा उपयोगिता नष्ट हो, भूमि प्रदूषण कहलाता है। भूमि प्रदूषण से मृदा के भौतिक व रासायनिक गुण प्रभावित होते हैं। सामान्यत: ठोस अपशिष्ट मिट्टी के नीचे दब जाते हैं। इससे एक ओर तांबा, ज़िंक, लेड आदि अनवीनीकरणीय धातुओं की हानि होती है, तो दूसरी ओर मृदा की उत्पादन क्षमता भी प्रभावित होती है। रासायनिक खादों, कीटनाशक दवाइयों, औद्योगिक कचरों आदि के प्रयोग द्वारा छोड़े गए ज़हरीले तत्वों के माध्यम से मिट्टी प्रदूषित हो रही है। रसायनों के माध्यम से मिट्टी में अवांछनीय बाहरी तत्वों की भारी सघनता की उपलब्धता के कारण मृदा प्रदूषण मिट्टी की पोषकता को कमज़ोर कर रहा है।

भूमि प्रदूषण से निपटने के उपाय–

- कूड़े-करकट के संग्रहण, निष्कासन एवं निस्तारण की व्यवस्था चुस्त-दुरुस्त की जाए।
- अपशिष्ट पदार्थों का निक्षेपण समुचित ढंग से किया जाए तथा कल-कारखानों से निकलने वाले सीवेज स्लज को भूमि पर पहुँचने से पूर्व उपचारित कर लेना चाहिए।
- नगर पालिका और नगर निकायों द्वारा अपशिष्ट निक्षेपण को प्राथमिकता दी जाए।
- सड़कों पर कूड़ा-कचरा फेंकना अपराध घोषित किया जाए।
- रासायनिक उर्वरकों का उपयोग आवश्यकता से अधिक न किया जाए।
- आम जन को भूमि प्रदूषण के दुष्प्रभावों की जानकारी दी जाए।
- जनसामान्य को इस बात के लिए प्रेरित किया जाए कि घर का कूड़ा-कचरा निर्धारित पात्रों में ही डालें तथा ग्रामीण जन उसे खाद के गड्डे में फेंकें।

2. विद्यार्थी स्वयं करें।

3. विद्यार्थी स्वयं करें।

4. विद्यार्थी स्वयं करें।

2 वह चिड़िया एक अलार्म घड़ी थी...

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-19 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. लेखक ने अलार्म घड़ी के निम्नलिखित फ़ायदे गिनाए हैं–
   - अ. अलार्म घड़ी परीक्षा के दिनों में बहुत आराम देती थी।
   - ब. अलार्म घड़ी हमें भोर में जगाती थी।
   - स. सुबह यात्रा पर जल्दी जाना होता था तो अलार्म घड़ी समय पर उठाने के काम आती थी।
2. पहली बार अलार्म घड़ी पाकर लेखक की यह प्रतिक्रिया रही कि वह उसमें चाबी भरकर अलार्म की घंटी बार-बार बजाकर उसके सम्मोहक प्रभाव को गहराई तक महसूस करता रहा।
3. चिड़िया लेखक के सिरहाने आकर इसलिए बैठ जाती थी क्योंकि कमरे से बाहर जाने का और कोई रास्ता नहीं था और वह लेखक को उठाना चाहती थी ताकि लेखक दरवाज़ा खोल सके और वह बाहर जा सके।
4. चिड़िया के लिए दरवाज़ा खोलने पर लेखक को यह महसूस हुआ कि वह किसी अनोखे अनुभव को देर तक सोकर व्यर्थ कर देता था।

Page-20 (लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. अ 2. द
3. स 4. ब

ख. 1. ✓ 2. ✗
3. ✓ 4. ✓

ग. 1. लेखक की देर रात तक पढ़ने तथा सुबह देर से उठने की आदतें इतनी पक चुकी थीं कि उनमें बदलाव की कोई संभावना नहीं रही थी। इसलिए लेखक के द्वारा यह कहा गया है कि मैं भी कहाँ सुधरने लायक बचा था।

2. लेखक को अपना कमरा इसलिए प्यारा लगता था क्योंकि उसमें केवल एक ही दरवाज़ा था तथा खिड़की व रोशनदान नहीं थे, जिसके कारण लेखक को प्रात:काल की रोशनी के कारण जल्दी नहीं उठना पड़ता था।

3. अकेले रहने का लेखक का अनुभव पहले तो सामान्य रूप से बीता किंतु चिड़िया के माध्यम से जब लेखक ने सुबह की सुगंध, ठंडी हवा का स्पर्श तथा कोमलकांत उजाला अपनी आँखों के आगे देखा तो उसे यह लगा कि इस अनोखे अनुभव को वह देर तक सोकर व्यर्थ करता रहा।

4. लेखक के कमरे में लगी पंत जी की तसवीर के पीछे चिड़िया ने अपना घोंसला बना रखा था। वहीं वह अपनी गृहस्थी जमा चुकी थी, इसलिए वह शाम को दरवाज़ा खुला होने के कारण कमरे में घुस तो जाती थी, किंतु सुबह होते ही वह पलंग के सिरहाने पर बैठकर अलग तरह की झुँझलाहट भरी चीं-चीं की आवाज़ निकालती ताकि वह कमरे से बाहर

निकल सके। फिर उसने लेखक की रज़ाई का कोना चोंच से पकड़कर खींचना प्रारंभ किया तथा रज़ाई के उस हिस्से पर आ बैठती थी जो लेखक के सीने पर होता था। इस प्रकार वह चोंच से रज़ाई के हिस्से को खींचकर अपनी चहचहाहट से लेखक को जगाती थी।

5. लेखक ने चिड़िया की तुलना माँ से इसलिए की है क्योंकि जिस प्रकार लेखक के देर तक सोने पर उसकी माँ उसे प्यार व झुँझलाहट से जगाती थी उसी प्रकार का वात्सल्य भाव उसे चिड़िया में उस समय दिखाई पड़ता था जब वह रोज़ सुबह उसके पलंग के सिरहाने आकर तथा सीने पर पड़ी रज़ाई के ऊपर बैठकर चीं-चीं की आवाज़ से लेखक को उठाती थी।

6. लेखक चिड़िया का उपकार इसलिए मानता है क्योंकि उसी के कारण वह प्रातःकाल के उस अनुभव को जान पाया जिसे वह सोकर व्यर्थ करता था। उसने लेखक को उस समय जगना सिखाया जब धरती ओस के मोती बिखराकर हर नए खिल रहे फूल का अभिनंदन कर रही होती है।

Page-21

घ. 1. परिवर्तन संसार का नियम है और वह किसी भी क्षेत्र में हो सकता है। जिस प्रकार की अनुभूति हमें बीते वर्षों में किसी भी वस्तु को देखकर अथवा प्राप्त करके होती थी आज उसमें परिवर्तन आ गया है, क्योंकि जिन चीज़ों से हमें उस समय आनंद आता था आज उनके स्थान पर अन्य प्रकार के साधनों के आने से उस प्रकार की अनुभूति अथवा ज्ञान प्राप्त नहीं हो पाता।

2. देर से सोने की आदत ने लेखक को जल्दी उठने नहीं दिया और इस कारण उसे उठने में कठिनाई होती थी। इस प्रकार लेखक की दिनचर्या तथा काम व दफ़्तर की ज़िम्मेदारी देर से उठने के कारण अव्यवस्थित हो गई। यही कारण था कि उसने तकिए को इसके लिए दोष देते हुए कहा कि तकिए ने मेरी बात सुनना बंद कर दिया था।

3. उक्त पंक्ति से यह आशय है कि जिस प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव लेखक नहीं कर पाता था उसे उसने चिड़िया के माध्यम से अनुभव किया। उषा सुंदरी अर्थात प्रातःकाल के सौंदर्य रूपी रत्न का अनुभव चिड़िया द्वारा लेखक को करा दिया गया था।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क. तत्सम – प्रथम, आश्चर्य, सौंदर्य, दशक, रात्रि

तद्भव – पहला, अचरज, सुंदरता, दहाई, रात

ख. बेखबर - खबर, बेर, खर

दरवाज़ा - दर, दवा, दरज़ा

नवजीवन - नव, जीवन, वन, जीव

कठिनाई - कई, नाई, कठिन

ग. महत्वपूर्ण, दाखिला, सरकारी, विभागों, निवृत्ति, द्वारा, कलाई, गहराई, रोमांचित, सघनता, मानवीय, संवेदनाओं, आश्चर्यजनक, महादेवी, जागकर, हैरानी, पड़ोसी, अंग्रेज़ी, हिंदी, ज़िम्मेदारी, कठिनाई, गृहस्थी, जगाए, जागृति, बैठकर,यांत्रिक, निर्मलता, ताकता, खोलकर, अनुभूति, सुंदरी, बिखराकर।

Page-22

घ. रज़ाइयाँ — छवियाँ
डिबियाँ — घड़ियाँ
चिड़ियाँ — खिड़कियाँ
ज़िम्मेदारियाँ — छुट्टियाँ

ङ. गृह – गृहमंत्री, गृहयुद्ध
मानव – मानवशास्त्र, मानवता
योग – योगमाया, योगबल
दश – दशमूल, दशमुख
स्वर्ग – स्वर्गनदी, स्वर्गवधू

च. 1. मेरे लिए इतना समय काफ़ी है।
वहाँ पर्याप्त सुविधाएँ थीं।
सरदी बहुत अधिक पड़ रही है।

2. मेरे जन्मदिन पर मेरे मित्र ने मुझे यह उपहार दिया।
गुरुजी के लिए मेरी ओर से यह तुच्छ भेंट है।

3. स्वदेश वापसी पर आपका शत-शत अभिनंदन।
बड़ों को अभिवादन करना मत भूलो।
आपका स्वागत है, पधारिए।

Page-23 (कौशल-परीक्षण)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. छोटी चिड़िया को लुप्त होने से बचाने के लिए हमारे ये प्रयास होने चाहिए कि हमें इन पक्षियों के लिए पानी का इंतज़ाम करना चाहिए। इसके लिए हमें खिड़की पर या बालकनी में इनके पीने के लिए एक मिट्टी के बरतन में पानी भरकर तथा इनके चुगने के लिए दाना रखना चाहिए। हम बाज़ार में बिकने वाले चिड़ियों के कृत्रिम घर लाकर अपने आँगन में लटका सकते हैं जिससे इन्हें घर बनाने के लिए जगह मिल सकती है। दाना-पानी की व्यवस्था भी उसमें सहज ढंग से की जा सकती है। इसके अतिरिक्त गौरैया जैसे पक्षी को बचाने के लिए मेहँदी जैसे पेड़ लगाने ज़रूरी हैं, उसमें पलने वाले कीड़े-मकौड़े चिड़ियों का भोजन हैं। अत: हमें अधिक-से-अधिक ऐसे पेड़-पौधे लगाने चाहिए जो इनका निवास-स्थान बन सके।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. विद्यार्थी स्वयं करें।
3. अगर लेखक के कमरे में खिड़की या रोशनदान होता तो लेखक की नींद वहाँ से आने वाली रोशनी से खुल जाती और इस कारण वह प्रात:कालीन प्राकृतिक सौंदर्य का प्रतिदिन आनंद ले पाता। चिड़िया को भी अपनी चीं-चीं वाली झुँझलाहट भरी आवाज़ से लेखक को जगाना नहीं पड़ता तथा वह स्वयं ही वहाँ से बाहर चली जाती।
4. चिड़िया - हे मानव! तुम इतनी देर तक सोते हो, प्रकृति के सौंदर्य से तुम क्यों वंचित रहना चाहते हो?
लेखक - चिड़िया रानी, मेरी नींद पूरी नहीं हो पाती। देर रात तक पढ़ने के कारण मैं सुबह जल्दी नहीं उठ पाता।
चिड़िया - तुम शायद यह भूल रहे हो कि केवल किताबों से ही आनंद प्राप्त नहीं होता, उसके लिए वास्तविक जीवन का अनुभव भी अनिवार्य है।
लेखक - बिल्कुल ठीक कहा तुमने चिड़िया रानी।
चिड़िया - तो कल से तुम उचित समय पर उठोगे और प्रकृति का आनंद उठाओगे।
लेखक - अवश्य चिड़िया रानी। तुमने मेरी आँखें खोल दीं और सच ही कहा कि वास्तविक जीवन का अनुभव भी अवश्य होना चाहिए। कल से मैं प्रतिदिन जल्दी उठूँगा।
5. विद्यार्थी स्वयं करें।

3 पक्षी-रक्षक

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-30 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. सिरिल और डॉ. राव दोनों ही पक्षी-प्रेमी थे तथा दोनों ही दुर्लभ पक्षियों की प्रजाति बचाने में जुटे थे।
2. पक्षियों पर लिखी पुस्तकें देखते समय सिरिल ने डॉ. राव को रॉबिन पक्षी के बारे में कहा कि यह पक्षी तो मैंने भी देखा है। इस पर डॉ. राव बोले असंभव! इस पुस्तक में दुर्लभ पक्षियों के चित्र हैं, तुम उनमें से एक को भी यहाँ नहीं देख सकते।
3. डॉ. राव ने सिरिल को काले रॉबिन के बारे में बताया कि चाथास द्वीप का काला रॉबिन एक बहुत ही दुर्लभ पक्षी है। अभी तक केवल यही पता था कि दो नर और तीन मादा ही जीवित हैं और वे न्यूज़ीलैंड के पूर्व में जो मंगारे द्वीप है, वहाँ पाए जाते हैं। यदि इनका खयाल न रखा गया, तो ये पक्षी अपनी संख्या बढ़ाए बिना ही मर जाएँगे और फिर पृथ्वी से काले रॉबिन पक्षियों का नाम ही मिट जाएगा।
4. काले रॉबिन को बचाने के लिए डॉ. राव ने सिरिल के साथ मिलकर यह योजना बनाई कि वे उनके अंडे चुराकर अन्य पक्षियों के अंडों में मिलाकर घोंसलों में रख देंगे। तब काले रॉबिन नए अंडे देंगे। इस तरह से वे हर ऋतु में अंडों को दोगुना कर सकेंगे।

(लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. ब 2. अ
3. स 4. स

Page-31

ख. 1. डॉ. राव काले रॉबिन को इसलिए बचाना चाहते थे क्योंकि वह दुर्लभ प्रजाति थी और उनके अनुसार केवल दो नर तथा तीन मादा ही जीवित थे।

2. श्रीमती फिशर को इस प्रकार की आश्चर्यजनक बातें देखने को मिलीं कि संसार के अनेक भागों से उनके पास पक्षी-प्रेमियों के पत्र आने लगे। पक्षी-विशेषज्ञों ने उन्हें सिरिल जैसे पुत्र के माता-पिता होने पर बधाई दी।

3. सिरिल को फुदकी के घोंसलों को साफ़ इसलिए करना पड़ा क्योंकि फुदकी के छोटे-से घोंसले से काले रॉबिन की बीट वगैरह बाहर नहीं गिर पाती थी।

4. यदि सिरिल की मुलाकात डॉ. राव से न हुई होती तो उसकी रुचि शायद कभी पढ़ने में न हो पाती क्योंकि सिरिल भी डॉ. राव की तरह ही पक्षी-प्रेमी बनना चाहता था तथा उनके बारे में जानने के लिए जिज्ञासु रहता था। अतः उनसे प्रभावित होकर ही वह एक पक्षी-विशेषज्ञ बनना चाहता था।

5. 'पक्षी-रक्षक' पाठ के माध्यम से लेखक ने पक्षियों की विलुप्त होती प्रजातियों के विषय में चिंता प्रकट की है तथा विद्यार्थियों के भीतर पक्षी-प्रेम व उनके संरक्षण के साथ-साथ उनके प्रति संवेदनशीलता का भाव भी उत्पन्न किया है। ऐसे विलुप्त होते पक्षियों के प्रति लेखक

विद्यार्थियों का ध्यान केंद्रित करना चाहता है ताकि हम उनके संरक्षण हेतु जागरूक हो सकें।

6. डॉ. राव से प्रभावित सिरिल उन्हीं की तरह एक पक्षी-विशेषज्ञ बनना चाहता था क्योंकि उसकी रुचि भी पक्षियों के प्रति थी। वह डॉ. राव के साथ काले रॉबिन को बचाने में भी उनका सहभागी रहा। अत: वह भी उन्हीं की तरह एक पक्षी-विशेषज्ञ बनना चाहता था, इसलिए उसने अपनी माँ से कहा कि यदि मैं भूगोल नहीं पढ़ूँगा और स्कूल नहीं जाऊँगा, तो पक्षी-विशेषज्ञ कैसे बनूँगा?

ग. 1. ✗ 2. ✓
3. ✗ 4. ✗

घ. 1. श्रीमती फिशर ने, डॉ. राव से कहा।
2. डॉ. राव ने, सिरिल से कहा।
3. सिरिल ने, डॉ. राव से कहा।
4. श्रीमती फिशर ने, सिरिल से कहा।

ङ. 1. क. डॉ. राव के अनुसार, सिरिल को भ्रम हुआ था।
ख. काला रॉबिन दुर्लभ पक्षी था।
ग. सिरिल इस बात पर अड़ा रहा कि उसने रॉबिन पक्षी को देखा है।
घ. सिरिल ने बलूत के विशाल वृक्ष पर दो रॉबिन पक्षी देखे थे।

2. क. सिरिल डॉ. राव की बातें ध्यान से सुन रहा था।
ख. डॉ. राव ने सिरिल के हाथ इसलिए धुलवाए क्योंकि गंदे हाथों से कीटाणु सीधे अंडे के खोल के सूक्ष्म रंध्रों द्वारा उनके भीतर जा सकते हैं।
ग. डॉ. राव ने अंडे रखने के लिए छोटा डिब्बा निकाला।
घ. कीटाणुनाशक दवाई कीटाणुओं को मारने का काम करती है।

Page-32 (श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क. 1. ृ - पृथक 2. गृ - गृह
3. कृ - कृषक 4. नृ - नृप
5. सृ - सृष्टि 6. घृ - घृणा

ख. 1. यदि संकटग्रस्त जीव-जंतुओं का संरक्षण न किया गया तो वे पृथ्वी पर दिखने दुर्लभ हो जाएँगे।
2. तालाब के किनारे एक विशाल वृक्ष था।
3. मनुष्य समय-समय पर नाराज़गी, करुणा, प्रेम, अचरज आदि मनोभाव प्रकट करता रहता है।
4. हमें असहाय तथा निर्धन व्यक्तियों की सहायता करनी चाहिए।
5. सिरिल पक्षी-विशेषज्ञ बनना चाहता था।

ग. 1. सुलभ 2. नापसंद
3. उथली 4. असाधारण
5. उजाला 6. उदास
7. अविश्वास 8. असुरक्षा
9. पुराने 10. साफ़

Page-33

घ. 1. मुझे 2. हम
3. उन्होंने 4. ये
5. मैं

(कौशल-परीक्षण)

1. पक्षी-प्रेमियों अथवा रक्षकों को अपना काम

करने में निम्न कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है–

- उन्हें ऊँची-ऊँची पहाड़ियों पर चढ़ना पड़ता है जहाँ से उनके पैर फिसल कर उनकी मृत्यु होने का डर बना रहता है।
- उन्हें प्रत्येक मौसम में तथा अत्यधिक शीत व ग्रीष्म जलवायु में भी जाना पड़ता है जो उनकी सेहत को प्रभावित करता है।
- जंगलों में रहकर उन्हें अपने कार्य पूर्ण करने होते हैं जिस कारण जंगली जानवरों का खतरा भी उन्हें निरंतर बना रहता है।
- दूरदराज़ के क्षेत्रों में रहकर वे अपना खान–पान ठीक प्रकार से नहीं रख पाते।

2. यदि मुझे कोई ऐसा पक्षी दिखे, जो किसी मुसीबत में हो, तो मैं उसकी सहायता उसकी चोट को ठीक करके, उसे पर्याप्त मात्रा में दाना–पानी देकर करूँगी/करूँगा।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. **यदि मैं पक्षी होता/होती।**

यदि मैं पक्षी होती तो मैं खुले आकाश में विचरण करती, भूमंडल में विचरण करती, इच्छानुसार भोजन करती और वृक्षों की शाखाएँ मेरी शय्या होतीं। मेरा जीवन स्वतंत्र और स्वच्छंद होता। मैं देश की सीमाओं में बँधी नहीं रहती, कहीं भी उड़ सकती। पक्षी बनकर मैं अपने मधुर गान से हर किसी को मोहित कर देती। मैं मानव से मित्रता कर उसका हित स्थापित करती। छोटे–मोटे कीड़े खाकर किसानों की फसलों की रक्षा करती। मुझे आज़ादी अत्यंत प्रिय होती और सभी को होती है, इसलिए मैं मनुष्यों को समझाती कि किसी को भी कैद में रखना गलत है। पक्षी बनने के पीछे एक प्रमुख वजह यह भी है कि कुछ पक्षियों को देवताओं के वाहन होने का गौरव प्राप्त है। कितनी प्रसन्नता होती मुझे यदि मैं गरुड़ बनकर भगवान विष्णु का, उल्लू बनकर देवी लक्ष्मी का, मोर बनकर कुमार कार्तिकेय का या फिर हंस बनकर ज्ञान की देवी माता सरस्वती का वाहन बनती।

पक्षी बनकर कभी मैं सूरज तो कभी चाँद से बातें करती। एक डाल से दूसरी डाल पर खूब चक्कर लगाती। घूम–घूमकर मैं सभी पक्षियों को अपना दोस्त बनाती। कितना मज़ा होता जीवन में यदि मैं पक्षी होती।

3. विद्यार्थी स्वयं करें।
4. विद्यार्थी स्वयं करें।

4 नन्हा पौधा–गुल्लू

(अभ्यास–उत्तर)

पाठ–बोध

Page-40 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. सब गुल्लू से प्यार करते थे, यह निम्न बातों से पता चलता है–

- सुबह की पहली किरण उसे सुप्रभात कहती थी।
- हवा भी गुल्लू को हल्की थपकियाँ देती और लोरी सुनाती।
- नन्ही बुलबुल गीत गाकर उसे जगाती।

• हरी-हरी घास उसे नई-पुरानी कहानियाँ सुनाती, तो बड़े-बड़े पेड़ उसे अकसर छेड़ते रहते।

2. गुल्लू को नई जगह इसलिए अच्छी नहीं लगी, क्योंकि उसको सब कुछ फीका-फीका और पराया-सा लगने लगा, वहाँ उसकी न तो किसी से जान-पहचान थी और न ही मेल-मिलाप। इस कारण गुल्लू को बहुत दुख होता और गुस्सा आता था।

3. पानी ने गुल्लू को समझाया कि, तुम अगर यों रूठे रहोगे तो सब लोग मेरा मज़ाक उड़ाएँगे कि गुल्लू ने अपने सबसे गहरे दोस्त की बात भी नहीं मानी। तुम्हारी हार मेरी हार है।.... इसलिए अपने लिए न सही, मेरे लिए ही कुछ खा-पी लो।

4. खाना पकाने में पौधों की मदद हवा करती है।

(लिखित अभिव्यक्ति)

क.	1.	स	2.	स
	3.	स	4.	ब
ख.	1.	✗	2.	✓
	3.	✗	4.	✓

Page-41

ग. 1. गुल्लू के सुंदर पत्ते मुरझाकर इसलिए लटक गए थे क्योंकि गुल्लू ने खाना-पीना सब बंद कर दिया था।

2. गुल्लू छोटा रहना इसलिए चाहता था क्योंकि वह सबसे सिर उठाकर बात कर सकता था।

3. लड़के गुल्लू को इसलिए ले गए थे क्योंकि उनका घर बन रहा था।

4. मिट्टी ने कहा कि कुछ ही दिनों में ऋतुरानी आने वाली है, वह हर मौसम में आती है। ऋतुरानी अपने साथ रंग-बिरंगे फूलों का टोकरा भी लाती है। वह पेड़-पौधों को फूल देती है, किसी को लाल, किसी को बैंगनी। तरह-तरह के फूल सभी ऋतुरानी से माँगते हैं। गुल्लू को मिट्टी की बातें दिलचस्प लगीं जिससे उसमें जीने की चाह पैदा हो गई।

5. गुल्लू की आवाज़ में अकुलाहट इसलिए थी क्योंकि वह अब न तो स्वस्थ दिख रहा था तथा न ही प्रसन्न रहता था।

घ. 1. किरण ने गुल्लू से

2. पानी ने गुल्लू से

3. गुल्लू ने मिट्टी से

ङ. 1. प्रस्तुत पंक्ति का आशय यह है कि हमें अपने जीवन में कभी हार नहीं माननी चाहिए तथा निराश नहीं होना चाहिए, चाहे कितनी भी विपत्तियाँ आ जाएँ। जैसे कि हवा ने कहा है, मुझे देखो, दिन-रात दुनिया भर का चक्कर लगाती हूँ, फूलों तथा सड़ी-गली हर जगह से गुज़रती हूँ, मैं तो कभी नहीं घबराती हूँ। इसलिए तुम्हें भी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। अगर तुम खुश रहोगे तो अपने दोस्तों की संख्या बढ़ा सकते हो।

2. प्रस्तुत पंक्ति का आशय यह है कि जिस तरह गुल्लू को बगीचे से उखाड़ कर एक क्यारी में लगा दिया गया था। वह गुल्लू को बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा। इसलिए उसने अपने प्रति हुए अन्याय का विरोध करने की ठानी। उसी तरह हमें भी अपने जीवन में हमेशा अपने बल पर ही जीना चाहिए और अगर हमारे साथ अन्याय होता है तो हमें भी न्याय पाने के लिए आवाज़ उठानी चाहिए।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क. 1. सुबह की पहली किरण उसे जगाती।

2. हरी-हरी घास उसे नई-पुरानी कहानियाँ सुनाती।
   - संख्यावाचक विशेषण
   - गुणवाचक विशेषण

3. हवा उस पौधे को हलकी थपकियाँ देती।

4. दो लड़कों की नज़र पौधे पर पड़ गई।
   - गुणवाचक विशेषण
   - संख्यावाचक विशेषण

5. सुंदर पत्ते मुरझाकर लटक गए।
   - गुणवाचक विशेषण

Page-42

ख. उद्धरण चिह्न, प्रश्नवाचक चिह्न, निर्देशक चिह्न, अल्प विराम तथा प्रश्नवाचक चिह्न।

ग. 1. ब 2. द

3. स

घ. 1. अधपका, अधकचरा

2. निबंध, निवास

3. विराम, विशेष

4. कुतर्क, कुपुत्र

5. स्वयंसेवक, स्वयंशासी?

6. सम्मान, संपत्ति

ङ. **1. सरल वाक्य–**
   - वह देखने में बहुत ही खूबसूरत था।
   - घबराई हुई हवा आई।

2. संयुक्त वाक्य–
   - सब उस पौधे से बहुत प्यार करते थे और सुबह की पहली किरण भी उसे सुप्रभात कहती।
   - गुल्लू को सब कुछ फीका-फीका और पराया-सा लगता।

3. मिश्रित वाक्य–
   - उसे बगीचे से उखाड़ लिया गया क्योंकि दो लड़कों की नज़र उस नन्हे पौधे पर पड़ गई थी।
   - तुम्हारी हार मेरी हार है इसलिए अपने लिए न सही, मेरे लिए ही कुछ खा-पी लो।

Page-43

च. 1. मैंने उसे अपनी पुस्तक देने को कहा तो वह अगर-मगर करने लगा।

2. आर्थिक तंगी तथा बहन की शादी की चिंता ने राकेश की नींद हराम कर रखी थी।

3. नौकरी की तलाश में राजेश दिन भर खाक छानता रहा।

4. नौकर से बरतन टूटने पर मालकिन लाल-पीली होने लगी।

5. कब तक लोगों को उल्लू बनाते रहोगे?

(कौशल-परीक्षण)

1. यदि हम किसी की मदद करना चाहें और वह व्यक्ति मदद माँगने से इनकार कर दे, तो हम उसकी मदद बिना बताए कर सकते हैं। उदाहरण के लिए यदि किसी विद्यार्थी को धन की आवश्यकता है और उसके आत्मसम्मान को ठेस न पहुँचे इसलिए वह किसी से धन नहीं लेना चाहता तो हम सीधे ही उस विद्यार्थी की फ़ीस जमा कराके या उसके परिवार की सहायता करके उसकी मदद कर सकते हैं।

2. 'नन्हा पौधा-गुल्लू' कहानी से यह संदेश मिलता है कि हमें जीवन में कभी हार नहीं माननी चाहिए। कैसी भी परिस्थितियाँ हो, हमें उनका हिम्मत से सामना करना चाहिए। साथ ही मनुष्य और प्रकृति के मध्य संतुलन एवं संरक्षण का संदेश भी इस पाठ से प्राप्त होता है।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. नहीं, यदि मैं पौधे की जगह होती/होता तो मैं अपने स्वाभिमान में नहीं रहता/रहती। हाँ, मुझे इस बात का दुख अवश्य होता कि मुझे दूसरी जगह लगा दिया गया, किंतु मैं उन परिस्थितियों में स्वयं को धीरे-धीरे ढाल लेता/लेती।

2. विद्‌यार्थी स्वयं करें।

3. विद्‌यार्थी स्वयं करें।

4. विद्‌यार्थी स्वयं करें।

सुझावित आवधिक प्रश्न-पत्र–1

खंड 'अ'

Page-45

क. 1. सबसे बड़ी चुनौती गाँवों को पूरी तरह से स्वच्छ बनाने हेतु कूड़ा निस्तारण से है।

2. गाँवों के आसपास गंदगी के ढेर इस कारण से बढ़ते जा रहे हैं, क्योंकि वहाँ पर कूड़ा निस्तारण का कोई प्रबंध नहीं है।

3. गद्‌यांश में स्वच्छ भारत ग्रामीण मिशन की बात की गई है।

4. इस मिशन के अंतर्गत गाँवों की पूरी तरह से स्वच्छ बनाने में कूड़ा निस्तारण प्रबंधन को भी शामिल किया गया है तथा गाँव से निकलने वाले तरल व ठोस कूड़े के निस्तारण का ढाँचा विकसित किया जाएगा।

खंड 'ब'

ख. 1. अनुकूल 2. खूबसूरत

3. ईमानदार

ग. 1. मैंने रीटा से शादी में जाने के लिए गाड़ी माँगी तो वह अगर-मगर करने लगी।

2. अशोक की साइकिल टूट जाने पर उसके पिता लाल-पीले होने लगे।

3. वर्तमान समय में अच्छी नौकरी हासिल करने के लिए व्यक्ति खाक फिरते हैं।

घ. 1. सुबह की पहली किरण उसे जगाती। (संख्यावाचक विशेषण)

2. दो लड़कों की नज़र पौधे पर पड़ गई। (संख्यावाचक विशेषण)

ङ. 1. प्यारा 2. दुखी

3. मोटापा

च. 1. संसार 2. सोना

3. दूध

छ. 1. स + उ + अं + अ + र्‌ + अ

2. क + ऋ + त + ज्‌ + ञ + अ

3. क + ई + ट + आ + ण + उ

ज. 1. असुरक्षा 2. सुलभ

3. उजाला

खंड 'स'

Page-46

झ. 1. लेखक को अपना कमरा इसलिए प्यारा लगता था क्योंकि वह स्वयं अपनी मर्जी के अनुसार अकेला रहता था। उसे कोई टोकने वाला नहीं था।

2. देर रात तक जगने को उसने बुरी आदत कहा है।

3. देर रात तक पढ़ने के कारण सुबह उसकी नींद भी देर से खुलती थी। दिन के काम और दफ्तर के काम अव्यवस्थित हो जाते थे।

4. तकिए ने लेखक की जल्दी उठा देने के मिन्नतें सुनना बंद कर दिया था।

ञ. 1. इसमें सच्ची समता के दाने बोने हैं,

इसमें जन की क्षमता के दाने बोने हैं,

इसमें मानव ममता के दाने बाने हैं,

जिससे उगल सके फिर धूल सुनहरी फसलें

मानवता की–जीवन श्रम से हँसे दिशाएँ

हम जैसा बोएँगे वैसा ही पाएँगे।

प्रस्तुत कविता 'यह धरती कितना देती है।' पर आधारित है। इसमें कवि ने बचपन में पैसे बोने की भूल स्वीकार की है। कवि सुमित्रानंदन पंत ने अनजाने में मिट्टी में सेम के बीज बो दिए थे। जब धरती में सेम के फलियाँ अधिक मात्रा में देखी तो उसे भी लालच आ गया कि पैसे बोने पर अधिक पैसे के पेड़ निकलेंगे और वह सेठ बन जाएगा।

पंत जी कहते हैं कि सेम की फलियों को देखकर अब मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि धरती रत्न और उपरत्न उत्पन्न करती है, इस कारण लोभ और स्वार्थ से रहित होकर हमें इसमें सच्ची ममता के बीज बोने होंगे। इससे अंकुरित, पुष्पित और फलित ममता के दानों को हमें घर-घर पहुँचाना होगा। कवि अपनी इच्छा व्यक्त करता है कि धरती के गर्भ में इसको मनुष्य की शक्ति का बीज बोना चाहिए और उससे उत्पन्न शक्ति की फलियों को घर-घर में बाँटकर लोगों में समर्थ बनने का भाव भरना चाहिए।

भाव– इस कविता में कवि ने स्वार्थ तथा भाग्यवाद के प्रति विद्रोह तथा परिश्रम, त्याग, परोपकार तथा मानवता के महत्व को दर्शाया है। जब व्यक्ति स्वार्थ से प्रेरित होकर कोई कार्य करता है तो उसका प्रतिफल अच्छा नहीं होता, किंतु जैसे ही परोपकार से प्रेरित होकर कार्य संपन्न करता है उसका फल अच्छा हो जाता है।

ट. 1. लेखक ने चिड़िया की तुलना माँ से इसलिए की है, क्योंकि बचपन में माँ प्यार भरे शब्दों से, अपने हाथों के स्पर्श से सिर पर हाथ फेर कर जगाती थी उसी प्रकार अब चिड़िया सुबह के समय पलंग के सिरहाने बैठी चीं-चीं की आवाज़ में तब तक जगाती रहती है जब तक कि वह जाग न जाए, कमरे का दरवाज़ा खुल न जाए। यदि लेखक नहीं जागता तो वह झुँझला जाती है और रजाई के ऊपर बैठकर चहचहाने लगती है। उसने लेखक की देर से उठने की आदत को ही बदल दिया।

2. 'यह धरती कितना देती है।' कविता के द्वारा कवि हम सबको संदेश देना चाहता है कि हमें भाग्य के भरोसे नहीं बैठना चाहिए। स्वार्थ की भावना से किया गया कोई भी कार्य फलित नहीं होता। इससे राष्ट्र का कल्याण नहीं हो सकता है। यदि परोपकार की भावना से कोई कार्य तो उसका प्रतिफल अच्छा होगा। अतः त्याग, परिश्रम, मानवता का संदेश घर-घर पहुँचाना चाहिए।

3. डॉ. राव काले रॉबिन को इसलिए बचाना चाहते थे, क्योंकि वह दुर्लभ पक्षी का तथा उसकी संख्या घटती जा रही थी।

ठ. 1. स 2. द

3. ब 4. ब

ड. **भूमि प्रदूषण–** भूमि के भौतिक, रासायनिक या जैविक गुणों में कोई ऐसा अवांछनीय परिवर्तन, जिसका प्रभाव मानव तथा अन्य

जीवों पर पड़े जिसके कारण भूमि की गुणवत्ता तथा उपयोगिता नष्ट हो जाए या कमी हो, वह भूमि प्रदूषण कहलाता है।

भूमि प्रदूषण के कारण हैं– भूमि प्रदूषण के अनेक कारण हैं वे निम्नलिखित हैं–

1. **औद्योगिक अपशिष्ट–**यह

   किसी–न–किसी रूप में भूमि प्रदूषण का कारक है। इन अपशिष्टों में कुछ जैव अपघटनशील ज्वलनशील, दुर्गंधयुक्त, विषैले कुछ निष्क्रिय पदार्थ होते हैं।

2. **कृषीय अपशिष्ट–**इसमें फसलों की कटाई के बाद बचे हुए डंठल, पत्तियाँ, घास–फूस, बीज आदि को शामिल किया जाता है। इन्हें कृषीय अपशिष्ट कहा जाता है। जब ये कृषि अपशिष्ट वर्षा के जल के साथ सड़ने लगते हैं तो भूमि प्रदूषण का कारण बनते हैं। इसके अलावा किसान फ़सलों की पैदावार को बढ़ाने के लिए रासायनिक खादों, कीटनाशी, शाकानाशी का प्रयोग करते हैं।

3. **घरेलू अपशिष्ट–**इस घरेलू अपशिष्ट में घरों में कूड़ा–करकट के अंतर्गत झाड़न–बुहारन से निकली धूल, रद्दी, काँच की शीशियाँ, पालीथीन की थैलियाँ, प्लास्टिक के डिब्बे, अध जली लकड़ी, चूल्हे की राख, बुझे हुए अंगारे शामिल हैं।

4. **नगरपालिका अपशिष्ट–**इसके अंतर्गत सब्जी बाजार की सड़ी–गली सब्ज़ियाँ, सड़े–गले फल तथा अन्य प्रकार का कूड़ा–कचरा, घरों से निकला हुआ करकट एवं मल, अस्पतालों से निकला हुआ अपशिष्ट, मछली बाजार, मुर्गी पालन केंद्र तथा सुअर पालन केंद्रों से निकला अपशिष्ट, बाग–बगीचों का कचरा, औद्योगिक इकाईयों द्वारा छोड़ा गया अपशिष्ट, सड़कों, नालियों, गटरों आदि से निकला हुआ कूड़ा–करकट पशुशालाओं से निकला हुआ चारा, गोबर एवं लीद आदि शामिल है।

   अन्य कारण–भूमि प्रदूषण के अन्य कारण भी हैं भू–रक्षण, भू–उत्सनन एवं रेडियो एक्टिव अपशिष्ट आदि के साथ परीक्षण के दौरान भूमि बंजर हो जाती है। इन सब कारणों से मिट्टी की उत्पादन क्षमता कम हो जाती है।

   भूमि प्रदूषण को रोकने के उपाय–

(i) फसलों पर छिड़कने वाली विषैली दवाओं का प्रयोग प्रतिबंधित किया जाए।

(ii) गांव तथा नगरों में मल एवं गंदगी को एकत्रित करने के उचित स्थान होने चाहिए।

(iii) कृत्रिम उर्वरकों के स्थान पर परंपरागत खाद का प्रयोग कृषि भूमि में करना चाहिए।

(iv) खेतों में पानी के निकास की उचित व्यवस्था होनी चाहिए। नहरों व नालियों को पक्का किया जाना चाहिए।

(v) वनों के विनाश पर प्रतिबंध लगाया जाए। वृक्षारोपण को प्रोत्साहन देकर मिट्टी निर्माण की प्रक्रिया में आए गतिरोध को दूर किया जाए।

(vi) भू–क्षरण को रोकने के सभी उपायों पर कार्य प्रारंभ हो।

(vii) बाढ़–नियंत्रण के लिए योजना बनाई जाए।

(viii) ढालू भूमि पर सीढ़ीनुमा कृषि पद्धति अपनाने पर बल देना चाहिए।

इकाई-II (ध्येय)

5 दानी सुमन

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-49 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. भ्रमर फूल के खिलने पर उस पर मधु के लिए मँडराते थे।
2. चंद्रमा की किरणों का व्यवहार फूल के प्रति अच्छा था। वे फूल को हँसाती रहती थीं।
3. कवयित्री फूल को यह समझा रही है कि यह संसार अत्यंत स्वार्थी है अतः तूने मुरझाकर अपना संपूर्ण जीवन दान कर दिया है। इस पर भी कोई दुखी नहीं होगा, तो तू क्यों दुखी होता है।
4. विद्यार्थी स्वयं करें।

(लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. ब 2. द
3. स 4. अ
5. अ

Page-50

ख. 1. सुमन के प्रति पवन के व्यवहार में विरोधाभास इसलिए था क्योंकि जब सुमन अपने बाल्यकाल में कली रूप में था, उस समय पवन के प्रभाव से वह खिल गया किंतु सुमन के मुरझाने पर पवन ने उसे ज़मीन पर गिरा दिया।

2. कवयित्री ने सुमन को 'दानी' इसलिए कहा है क्योंकि पुष्प का हृदय उदार है। वह जगत पर अपना सर्वस्व न्योछावर कर देता है, किंतु उसके मुरझाकर सूख जाने पर सभी उससे आँखें फेर लेते हैं, किसी को भी उससे सहानुभूति नहीं होती। 'दानी' किसी से कुछ लेता नहीं अपितु परोपकार की भावना रखता है।

3. फूल जब खिला हुआ था तो उस पर बहुत से भँवरे मँडराते रहते थे। उस पर चंद्रमा, पवन और माली का स्नेह उमड़ता था। वह तब उद्यान में अठखेलियाँ करता था। किंतु उसके मुरझाने के पश्चात् भँवरों ने उसके पास आना बंद कर दिया। जिस पवन ने उसे आनंद दिया था आज उसी ने सुमन को ज़मीन पर गिरा दिया। अपनी इस दशा से सुमन बहुत दुखी था।

4. मनुष्य तथा पुष्प दोनों के व्यवहार में यह अंतर है कि पुष्प जहाँ परोपकार का भाव रखता है वहीं मनुष्य स्वार्थी है। मनुष्य का जीवन सार रहित है, अतः पुष्प उसे अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिए प्रेरित करता है।

5. 'दानी सुमन' कविता यह संदेश देती है कि मनुष्य का जीवन क्षणभंगुर है, अतः अपने जीवन में उसे कुछ उद्देश्य निर्धारित करने चाहिए तथा उसी के अनुरूप उसका आचरण होना चाहिए। परोपकार की भावना व्यक्ति के भीतर सदैव बनी रहनी चाहिए तथा उसे स्वार्थपरता से दूर रहना चाहिए।

ग. उक्त पंक्तियों का भाव यह है कि फूल जब तक मुरझाकर मरता नहीं तब तक वह खुशबू तथा सुंदरता का प्रतीक होता है, किंतु उसके बाद भी संसार उसकी इस परोपकार

की भावना तथा उद्देश्यपूर्ण जीवन के खत्म होने पर दुख व्यक्त नहीं करता, फिर हम जैसे सार रहित मनुष्य के हश्र पर आँसू बहाने वाला कौन है।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. विद्यार्थी स्वयं करें।

Page-51 (भाषा-ज्ञान)

क.
1. पुष्प, सुमन
2. वायु, समीर
3. चाँद, शशि
4. बाग, उपवन
5. जगत, विश्व

ख.
1. अंक
2. मंजुल
3. आनंद
4. चंद्र
5. संपदा

ग.
1. भँवरा
2. चाँद
3. नींद
4. मनुष्य

घ.
1. स् + उ + म् + अ + न् + अ
2. उ + द् + य् + आ + न् + अ
3. द् + आ + न् + ई
4. म् + अ + ध् + उ
5. स् + अं + स् + आ + र् + अ

ङ.
2. पुष्पवर – भ्रमर
3. सदा – संपदा
4. उद्यान – ध्यान
5. बिखराया – मुरझाया
6. आता – बरसाता
7. किया – दिया
8. संसार – करतार
9. भाता – हर्षाता
10. संसार – निस्सार

Page-52 (कौशल-परीक्षण)

1. प्रकृति को निकटता से देखने पर शरीर में एक नवीन उत्साह उत्पन्न होने लगता है। प्राकृतिक दृश्यों को देखकर मन मोहित हो उठता है। मैदानी क्षेत्रों की अपेक्षा वहीं प्रकृति की गोद में ठहर जाने की इच्छा होने लगती, मन करता है कि प्रकृति के रमणीय दृश्यों के मध्य बैठकर उन्हें निहारते ही रहें। शरीर में जैसे रक्त प्रवाह अच्छा हो जाता है तथा स्वास्थ्य भी ठीक लगने लगता है। सांसारिक दुखों, मोह-माया के बंधनों से दूर रहने के लिए प्रकृति का सामीप्य अत्यंत आवश्यक हो जाता है।
2. 'दानी सुमन' कविता से हमने अपने जीवन में यह प्रेरणा ग्रहण की कि हमें परोपकारिता की भावना से परिपूर्ण होना चाहिए तथा स्वार्थ की भावना से स्वयं को दूर रखना चाहिए। साथ ही जीवन को सार्थक बनाने के लिए हमारा कोई ध्येय अवश्य होना चाहिए।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. अपने चारों ओर हम जो भी प्राकृतिक वस्तुएँ देखते हैं, वही प्रकृति है। प्रकृति से हमें वह सब मिलता है जो मनुष्य के जीवन के लिए अति आवश्यक है, जैसे-साँस लेने के लिए वायु (ऑक्सीजन), पीने के लिए पानी और पेट भरने के लिए खाद्य सामग्री। यदि प्रकृति न होती तो हमारा जीना असंभव होता क्योंकि प्रकृति से ही हमें सब कुछ प्राप्त होता है।
2. विद्यार्थी स्वयं करें।
3. कवयित्री ने मनुष्य जीवन को निस्सार कहा है किंतु मैं अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहती/चाहता हूँ ताकि मेरा जीवन सफल हो सके। हमें अपने जीवन में कोई-न-कोई उद्देश्य लेकर चलना चाहिए तथा परोपकार का भाव सदैव अपने भीतर रखना चाहिए तभी हमारा जीवन सफल हो सकता है।
4. विद्यार्थी स्वयं करें।
5. विद्यार्थी स्वयं करें।

6 कोटर और कुटीर

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-60 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. चातक पुत्र कहीं से भी जल ग्रहण करने की बात पर अड़ा हुआ था। इसके लिए उसने यह तर्क दिए कि मैं थोड़ी-सी क्षुधा से नहीं डरता, परंतु यह भी नहीं चाहता कि क्षुधा ही क्षुधा सहन करता रहूँ। मैं ऐसा व्रत व्यर्थ समझता हूँ। देवताओं का अभिशाप लेकर भी मैं इसे तोड़ूँगा। घनश्याम को भी सोचना ही चाहिए था कि उनके बिना किसी के प्राण निकल रहे हैं। आदमी ने मेघों पर अविश्वास करके कृषि की रक्षा के लिए नहर, तालाब और कुओं का बंदोबस्त कर लिया है। कृषि ने आपकी तरह सिर नहीं हिलाया कि मैं तो घनश्याम के सिवा और किसी का जल ग्रहण नहीं करूँगी। हम ही क्यों इस तरह कष्ट सहें? आप चाहे रखें या छोड़ें, मैं यह झंझट न मानूँगा।
2. बुद्धन गोकुल का पिता था। अवस्था में वह पचास वर्ष से ऊपर का हो चला था। बुद्धन का कच्चा खपरैल का घर था। छोटी-छोटी दो कोठरियाँ, फिर उन्हीं के अनुरूप आँगन और उसके आगे पौर। पुराना छप्पर नीचे झुककर घर के भीतर आश्रय लेने की बात सोच रहा था। जीर्ण-शीर्ण दीवारें रोशनदान न होने की साध दरारों के 'दत्तक' से पूरी करना चाहती थीं।
3. इंजीनियर साहब द्वारा ओवरसियर साहब को डाँटे जाने के कारण उन्होंने अपना गुस्सा मज़दूरों को मज़दूरी न देकर उतारा। यही कारण था कि गोकुल को मज़दूरी नहीं मिली थी।
4. गोकुल द्वारा अपने पिता को महतो के बटुआ मिलने तथा उसे वापस करने के वृत्तांत को सुनाने और उसके ईमानदारी के भाव को स्वयं के भीतर बनाए रखने के कारण बुद्धन ने गोकुल को अपनी भुजाओं में भर लिया।
5. 'कमज़ोरी के ऊपर से ही आक्रमण करना विजय की पहली सीढ़ी है' कथन का अर्थ है कि कमज़ोर व्यक्ति अपने उत्तर तर्क के साथ प्रस्तुत नहीं कर सकता और उसकी इसी कमज़ोरी का फ़ायदा उठाकर उस पर प्रश्नों की बौछार कर देनी चाहिए, ताकि वह पूर्णत: तर्कविहीन हो सके।

Page-61 (लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. द 2. ब
3. ब 4. द

ख. 1. कोटर और कुटीर दो कथाएँ हैं जो एक-दूसरे की पूरक हैं क्योंकि जहाँ पहली कथा में चातक पुत्र प्यास से व्याकुल होकर गंगा जल ग्रहण करने के लिए उड़ान भरता है वहीं बुद्धन व गोकुल के संवाद के माध्यम से उसे अपनी भूल का अहसास तथा व्रत-पालन की बात याद आती है। जहाँ पहली कथा में लेखक ने समस्या को उठाया है तो वहीं कुटीर की कथा में उस समस्या का समाधान प्रस्तुत किया है।

2. चातक अपने पुत्र की बातों से इसलिए सिहर उठा क्योंकि वह क्षुधा सहन न कर पाने के कारण कहीं से भी जल ग्रहण करने की बात कहकर अपने पिता से तर्क-वितर्क करता रहा तथा अपनी बातों पर अड़ा रहा।

3. चातक पुत्र को पोखरी का स्मरण करने पर फुरहरी इसलिए आ गई थी क्योंकि उसमें बहुत गंदगी थी। सूखे पत्ते, डंठल आदि गिरकर उसमें सड़ते रहते थे। कीड़े कुलबुलाते हुए उसमें साफ़ दिखाई दे सकते थे। लोग उसमें कपड़े निखारने आते थे।

4. अ. गोकुल ईमानदार व्यक्ति था।

ब. वह संयमशील था।

स. अपने पिता का सम्मान करता था।

द. संकल्पनिष्ठ व्यक्ति था।

5. गोकुल द्वारा अपने पिता को महतो का बटुआ पाने तथा उन्हें उसे वापस करने का वृत्तांत सुनाते समय अपने पुत्र की ईमानदारी का भान होने तथा उसके दृढ़ संकल्पी होने को देखते हुए बुद्धन की आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई। उस समय ये सब बातें सुनकर और आदर्श एवं मर्यादा पालन के लिए 'चातक' का उदाहरण सुनकर चातक पुत्र को भी आत्म-मर्यादा और आत्माभिमान का बोध हुआ।

ग. 1. चातक ने, अपने पुत्र से कहा।

2. चातक ने, अपने पुत्र से कहा।

3. गोकुल ने, महतो से कहा।

Page-62 (श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क. 1. **निषेधवाचक वाक्य**

अ. आप चाहे रखें या छोड़ें, मैं यह झंझट न मानूँगा।

ब. आज खाने के लिए घर में और कुछ था ही नहीं।

2. **प्रश्नवाचक वाक्य**

अ. तुझसे अकेले तृप्त होते कैसे बनेगा?

ब. मजूरी नहीं मिली फिर इतनी देर क्यों हुई?

3. **आज्ञावाचक वाक्य**

अ. बेटा! धैर्य रख।

ब. सदा ऐसी ही मति रखना।

ख. 1. का 2. से

3. ने 4. को

5. में, के 6. से

7. ने, के लिए 8. के, से

ग. 1. बहुमूल्य 2. श्रद्धा

3. दुर्गम 4. पर्याप्त

5. सहयोग

Page-63

घ. 1. पक्षाघात 2. यथार्थ

3. देवालय 4. रवींद्र

5. रजनीश 6. महात्मा

ङ. 1. क्या तुमने यह काम किया है?

2. सुभद्रा विदुषी स्त्री है।

3. सुंदर चाँद निकला है।

4. जैसी करनी वैसी भरनी।

5. कान्हा ने बंसी बजाई।

6. एक बड़ी-सी छतरी लाओ।

7. ताज़े फूलों की टोकरी ले आओ।

8. रमा को आम काटकर खिलाओ।

9. साहित्य और समाज का घनिष्ठ संबंध है।

10. हमारा घर सबसे अच्छा है।

(कौशल-परीक्षण)

1. संतान का अपने माता-पिता की बात न मानना अनुचित है क्योंकि माता-पिता अपने बच्चों का भला ही चाहते हैं। बच्चों का हित-अहित माता-पिता से बेहतर कोई नहीं समझ सकता तथा अनुभवी होने के कारण वे उन्हें डाँटते हैं, तो इसमें कुछ गलत नहीं। अत: बच्चों का उनसे तर्क करना ठीक नहीं।

2. सच्चाई, वफ़ादारी, ईमानदारी, माता-पिता का आदर आदि जीवन-मूल्य शाश्वत हैं। जीवन-मूल्यों पर चलकर ही किसी भी घर, समाज, देश के चरित्र का निर्माण होता है। सच बोलकर, ईमानदारी से प्रत्येक कार्य करके, अपने से बड़ों का सम्मान करके हम अपने जीवन-मूल्यों को बनाए रख सकते हैं। यही जीवन-मूल्य हमारे लिए सुरक्षा कवच बन जाते हैं। हमें इनसे हर परिस्थिति में सामना करने की शक्ति मिलती है।

Page-64 (विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. यदि मैं गोकुल के स्थान पर होती/होता तो मैं भी अपनी ईमानदारी का पालन करती/करता तथा महतो को उसका बटुआ वापस दे देता/देती।

3. विद्यार्थी स्वयं करें।

4. गोकुल : महतो तुम्हारा कुछ खो तो नहीं गया?

महतो : नहीं तो, पर तुमने ऐसा क्यों पूछा?

गोकुल : साहब, ठीक से देखिए, मुझे यह बटुआ रास्ते में पड़ा हुआ मिला है।

महतो : अरे! यह तुम्हें कहाँ मिला? यह तो मेरा ही बटुआ है। भगवान तुझे सुखी रखे भैया, जो तूने इसे मुझे लाकर दिया।

गोकुल : इसमें कितने रुपये हैं?

महतो : बयालीस रुपये, एक अठन्नी, एक घिसी हुई बेकाम दुअन्नी, दस या बारह आने पैसे, एक कागज़, एक चाँदी का छल्ला.....।

गोकुल : जी, इसमें इतने ही रुपये-पैसे हैं।

महतो : भैया मैंने तुम्हारे जितना ईमानदार व्यक्ति आज तक नहीं देखा। यदि किसी और को यह बटुआ प्राप्त होता तो वह मुझे मार ही देता। मेरा रोम-रोम तुझे आशीष दे रहा है।

5. वल्लभ रोड

मुजफ्फरपुर

18 मई, 20XX

पूजनीय दादा जी,

सादर प्रणाम,

मैं यहाँ कुशलता से हूँ तथा आपके अच्छे स्वास्थ्य की कामना करता हूँ। मेरी इस सत्र की परीक्षाएँ बहुत अच्छी गई हैं। मेरा प्रिय मित्र रोहित भी अपनी परीक्षाएँ अच्छे से दे सका। हालाँकि परीक्षा के दिनों में उसकी नोटबुक खो गई थी जिस कारण वह अत्यंत परेशान था। किंतु मैंने उस विषय का अध्ययन पहले ही पूर्ण कर लिया था इसलिए मैंने अपनी नोटबुक उसे दे दी, ताकि वह भी परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण कर सके। हम दोनों की परीक्षाएँ तो अच्छी गईं, अब केवल परीक्षा परिणाम का इंतज़ार है। आप अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखिए। मैं और मेरा मित्र जल्दी ही आपसे मिलने आएँगे।

आपका प्यारा

मोहित

28, शिवालिक नगर

देहरादून

7 मित्रता

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-71 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. हमारे मित्र कैसे हैं इसका गुप्त प्रभाव हमारे आचरण पर पड़ता है, अत: उनके उपयुक्त चुनाव पर ही हमारे जीवन की सफलता निर्भर करती है।

2. मैत्री का उद्देश्य जीवन में ऐसे मित्र बनाना है जो अपने उत्तम संकल्पों से हमें दृढ़ करेंगे, दोषों और त्रुटियों से हमें बचाएँगे, हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करेंगे, जब हम कुमार्ग की ओर जाने लगेंगे तो वे हमें सचेत करेंगे, जब हम हतोत्साहित होंगे तब वे हमें उत्साहित करेंगे।

3. लेखक ऐसे लोगों से दूर रहना चाहता है जो न कोई बुद्धिमानी या विनोद की बातचीत कर सकते हैं, न हमारे आनंद में सम्मिलित हो सकते हैं और न ही हमें हमारे कर्तव्य का ध्यान दिला सकते हैं।

4. जब एक बार मनुष्य कीचड़ में पैर डालता है, तो फिर वह यह नहीं देखता कि वह कहाँ और कैसी जगह पैर रखता है– इस कथन से लेखक का आशय है कि हम यदि एक बार कुसंगति का शिकार हो जाते हैं तो उसमें धँसते ही चले जाते हैं। हमारा विवेक कुंठित हो जाता है तथा हमें भले-बुरे की पहचान नहीं रहती।

5. लेखक अपने मित्र की वह बात याद करता है कि लड़कपन में उसने कहीं से बुरी कहावत सुनी थी, जिसका ध्यान वह लाख चेष्टा करता है कि न आए, पर बार-बार आता है।

(लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. स 2. ब
3. ब 4. ब
5. ब

Page-72

ख. 1. उक्त कथन का आशय यह है कि हमारी माता जिस प्रकार हमारा ख़याल रखती हैं तथा एक वैद्य जिस प्रकार हमारी बीमारी की परख करता है व निपुणता के साथ उस मर्ज़ का इलाज पूरी तरह से करता है उसी प्रकार का हमारा मित्र भी होना चाहिए। वह हमें उत्तम संकल्पों से दृढ़ करे, हमें दोषों-त्रुटियों से बचाएँ, हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करे, जब हम कुमार्ग पर पैर रखे तब वह हमें सचेत करे तथा जब हम हतोत्साहित हों, तब हमें उत्साहित करे।

2. मित्र का चुनाव करते समय हमें निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए–
- मित्र सच्चे पथ-प्रदर्शक के समान होना चाहिए, जिस पर हम पूरा विश्वास कर सकें।
- मित्र प्रतिष्ठित व शुद्ध हृदय का होना चाहिए।
- वह मृदुल व पुरुषार्थी होना चाहिए।
- शिष्ट तथा सत्यनिष्ठ हो, जिससे हम स्वयं को उसके भरोसे पर छोड़ सकें और यह विश्वास कर सकें कि उससे किसी प्रकार का धोखा न होगा।

3. भिन्न प्रकृति और स्वभाव के लोगों में मित्रता बने रहने का कारण यह है कि एक व्यक्ति जो अपने मित्र का चुनाव करता है वह उन गुणों को अन्य व्यक्ति में ढूँढ़ता है जो उसके भीतर नहीं होते। यही कारण है कि चिंताशील मनुष्य प्रफुल्ल-चित्त का साथ ढूँढ़ता है, निर्बल बली का तथा धीर उत्साही का। उच्च आकांक्षा वाला चंद्रगुप्त युक्ति और उपाय के लिए सदैव चाणक्य पर आश्रित रहता था। नीति विशारद अकबर मन बहलाने के लिए बीरबल की ओर देखता था।

4. मित्रता से आत्म-शिक्षा का कार्य इसलिए सुगम हो जाता है क्योंकि सच्चे मित्र हमें प्रत्येक कदम पर सचेत करते हैं। उत्तम संकल्पों से दृढ़ करते हैं, दोषों और त्रुटियों से बचाते हैं, उत्तमतापूर्वक जीवन-निर्वाह करने में हर तरह से सहायता करते हैं। वे हमें सही-गलत की पहचान कराते हैं। ऐसे मित्रों में अच्छी-से-अच्छी माता का-सा धैर्य और कोमलता होती है।

5. मित्रता का रिश्ता एक ऐसा रिश्ता है जिसे हर मानव स्वयं बनाता है। बाकी सभी रिश्ते तो जन्म के साथ ही बन जाते हैं। एक सच्चा मित्र वह है जो हमें सदैव हमारी गलतियों से अवगत कराए। उसे सदैव हमें हमारे करीब होने का अहसास कराना चाहिए। हमारी बुरी आदतों को छुड़वाने के लिए उसे सदैव प्रयासरत रहना चाहिए। उसे हमारे सुख-दुख में साथ निभाने वाला होना चाहिए। वह सदैव हमें मानसिक रूप से मज़बूत बनाए। जब हम निरुत्साहित हों, तब वह हमारी हिम्मत बढ़ाए। हमारे विचलित होने पर वह हमारा मार्गदर्शन करे।

ग. 1. विश्वासपात्र मित्र जीवन में औषधि के समान होते हैं। वे हमारी बातों को स्वयं तक ही सीमित रखते हैं तथा भले-बुरे का ज्ञान कराते हैं। ऐसे मित्र जीवन में हमारी रक्षा करते हैं। वे हमारे हतोत्साहित होने पर हमें उत्साहित करते हैं। हमें दोषों एवं त्रुटियों से बचाते हुए सद्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं। हमारे जीवन-निर्वाह के हर कदम में वे हमारा साथ देते हैं।

2. मनुष्य जीवन की अवधि सीमित है। इन वर्षों में मनुष्य को ऐसे कार्य करने चाहिए जिससे उसके जीवन की सार्थकता प्रकट हो। अतः सुमित्र बनाना भी जीवन का प्रमुख कार्य बन जाता है। इसलिए हमें कुसंगति में पड़कर अपने जीवन को बरबाद नहीं करना चाहिए, बल्कि ऐसे मित्र बनाने चाहिए जो हमारे जीवन को सफल बना सकें।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क. 1. दिन और रात — द्वंद्व समास

2. भला और बुरा — द्वंद्व समास

3. लाभ और हानि — द्वंद्व समास

4. विश्वास का पात्र — तत्पुरुष समास

5. पथ को प्रदर्शित करने वाला — तत्पुरुष समास

6. नीति में विशारद (चतुर) — तत्पुरुष समास

7. दाल और रोटी — द्वंद्व समास

Page-73

ख. 1. विश्वासपात्र 2. सहपाठी
3. सत्यनिष्ठ 4. पथ-प्रदर्शक
5. आध्यात्मिक 6. विशाल हृदय
7. कुलीन

ग. 1. चतुर+आई 2. निपुण+ता
3. प्रतिष्ठा+इत् 4. बढ़+इया
5. धर्म+इक 6. लड़क+पन

घ. 1. शत्रुता 2. अनुपयुक्तता
3. अपरिपक्व 4. अनादर्श
5. अप्रतिष्ठित 6. अशिष्ट

ङ. 1. उन दोनों की मित्रता खूब निभी।2. मनुष्य जाति के हृदय में सात्विकता की उमंगें उठती हैं।
3. बुराई अटल भाव धारण करके बैठती है।
4. तुम्हारा विवेक कुंठित हो जाएगा।
5. अंत होते-होते तुम भी बुराई के भक्त बन जाओगे।

Page-74 (कौशल-परीक्षण)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. मैं अपने मित्र में निम्न गुणों को देखना चाहूँगी/चाहूँगा–
- मेरा दोस्त व्यर्थ की बहस में न पड़ने वाला हो।
- वह मेरी बात सुने और समझने की कोशिश करे।
- मेरा मित्र मुझे सदैव प्रोत्साहित करने वाला हो।
- मेरा मित्र सदैव मेरे अच्छे कार्य में मेरा साथ दे तथा गलत कार्य न करने की हिदायत दे।
- मेरी सफलता में मेरा मित्र हमेशा साथ खड़ा रहे।
- मेरा मित्र मुझे सदैव सद्मार्ग की ओर ले जाने वाला हो।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. कृष्ण कुंज, पवन विहार
नई दिल्ली
18/6/20XX
प्रिय अमन
बहुत प्यार!

कल तुम्हारे मित्र से मुलाकात हुई जो अपनी आर्थिक परिस्थिति के चलते अपने घर आया हुआ है। उससे ज्ञात हुआ कि आजकल तुम्हारा मन पढ़ाई में न लगकर आवारा लड़कों के साथ यहाँ-वहाँ घूमने में लगता है। इसके लिए तुम्हें विद्यालय की तरफ़ से भी सचेत किया जा चुका है। उनके साथ सारा समय नष्ट करने के कारण तुम परीक्षा में भी अनुत्तीर्ण हुए हो। भाई तुम ध्यान रखना कि तुम्हारे ये कुमित्र तुम्हें कहीं का नहीं छोड़ेंगे। बुरी संगति मनुष्य को ले डूबती है। यदि मित्र अच्छा हो तो जीवन सँवर जाता है और यदि मित्र बुरा हो तो जीवन नरक से भी बुरा हो जाता है। एक अच्छा मित्र साथ हो तो सही मार्गदर्शन कर हमें सफलता के शिखर पर ले जाता है। अतः हमें चाहिए कि हम सुमित्र बनाएँ।

माता-पिता ने तुम्हें पढ़ने के लिए शिमला के सबसे अच्छे विद्यालय में भेजा है ताकि तुम्हारा भविष्य सँवर सके। परंतु तुम्हारे इस व्यवहार से वे बहुत चिंतित हैं। मुझे आशा है कि तुम कुसंगति से अपना मन हटाकर पढ़ाई में ध्यान लगाओगे।

तुम्हारा शुभचिंतक भाई
विपिन

2. **सद्संगति सब विधि हितकारी**

सत्संगति का अभिप्राय-अच्छी संगति अथवा साथ है। संगति घर से ही आरंभ होती है। घर के बाहर व्यक्ति जब भले लोगों के बीच में उठता-बैठता है, उसे सत्संगति कहते हैं। मनुष्य अच्छे लोगों के बीच रहकर अच्छा आचरण करता है। वह सत्पुरुषों में

अपना मान-सम्मान बढ़ाना चाहता है। भगत सिंह क्रांतिकारियों के संपर्क में आए तो क्रांतिकारी बन गए। यदि उनकी संगति बुरे व्यक्तियों के साथ होती तो शायद वे वैसे ही ढल गए होते। इस प्रकार सत्संगति ने उनके जीवन की दिशा बदल डाली। वे भारतवर्ष के चहेते बन गए। लोग उन्हें अब भी बलिदानी और क्रांतिकारी वीर के रूप में याद करते हैं। अच्छी संगति में रहने वाला मनुष्य पाप-बोध से रहित होता है। उसकी आत्मा स्वच्छ होती है। इसलिए उसके चेहरे पर दुख, पश्चाताप, निराशा आदि दुर्भाव नहीं होते। वह सदा आत्मविश्वास और उल्लास से खिला-खिला रहता है। सत्संगति से मनुष्य अच्छे मार्ग पर चलता है तथा उसकी सुख प्रवृत्तियाँ जाग्रत होती हैं।

3. विद्यार्थी स्वयं करें।

4. विद्यार्थी स्वयं करें।

8 करुणा की विजय

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-78 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. मोहन एक निर्धन बालक था।

2. मोहन इसलिए विचलित हुआ क्योंकि उसके पास दो-तीन पैसों का चना बचा हुआ था तथा उसकी छोटी बहन रामकली भूख की रट लगाए हुए थी।

3. मोहन ने इसलिए मृत्यु-दंड माँगा क्योंकि उसने न्यायाधीश से अपनी बहन रामकली को मारने की बात की।

(लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. ब 2. अ

3. द 4. स

ख. 1. माता-पिता की मृत्यु के पश्चात् मोहन अपना जीवन-निर्वाह चनों को बेचकर करता था।

2. रामकली के बार-बार माँगने और रोने पर भी मोहन उसे चने इसलिए नहीं देना चाहता था क्योंकि वह चाहता था कि उन चनों को बेचकर वह डेढ़-दो पैसों से अपना और रामकली का पेट भर लेगा तथा चार पैसों से सवेरे चने उबालकर फिर अपनी दुकान लगा लेगा।

3. न्यायाधीश ने मोहन को अपनी बहन की हत्या के लिए इसलिए अपराधी नहीं माना क्योंकि न्याय अपराध का कारण ढूँढ़ता है। असहाय, निर्धन और अभिमानी तथा निर्बोध बालक के हाथ में शिशु का भार रख देना राष्ट्र के शुभ उद्देश्य की गुप्त रीति से और शिशु की प्रकट रूप से हत्या करना है।

4. मोहन तेरह वर्षीय एक निर्धन, अभिमानी तथा निर्बोध बालक था जो अपनी तीन वर्षीय छोटी बहन रामकली के साथ रहता था। वह चने बेचकर अपना और अपनी बहन का जीवन-निर्वाह करता था।

5. न्यायाधीश के अनुसार व्यवस्थापक का कर्तव्य मोहन जैसे निर्धनों की सहायता करना है जो बाल-श्रम में लगे हुए हैं तथा अपना जीवन-निर्वाह

बहुत कठिनाई से कर पाते हैं एवं अनाथ हैं। व्यवस्थापक से यह चूक हुई कि उसने निर्बोध बालक मोहन के हाथ में शिशु की जिम्मेदारी देकर उसकी प्रकट हत्या कर दी।

Page-79

ग. 1. 'सिर काटती है तलवार किंतु वही सिर काटने के अपराध में नहीं तोड़ी जाती है' का भाव यह है कि न्यायाधीश तथा व्यवस्था द्वारा दोषी को सज़ा तो दी जाती है किंतु बाल-अपराध का ऐसा दोषी जो असहाय, निर्धन तथा निर्बोध है, उसे दोषी करार नहीं दिया जा सकता।

2. बाल-श्रम में लगा एक तेरह वर्षीय बालक जो अपनी तीन वर्षीय बहन की ज़िम्मेदारी सँभालता है, ऐसे बच्चों के लिए व्यवस्थापक को उचित व्यवस्था करनी चाहिए। छोटे बच्चों पर इस प्रकार की ज़िम्मेदारी पड़ने से उनका पूर्ण विकास नहीं हो पाता। ऐसा करके हम उनका बचपन छीन रहे हैं।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क. 1. संख्यावाचक विशेषण
2. गुणवाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण
4. संख्यावाचक विशेषण

ख. 1. संयुक्त वाक्य
2. सरल वाक्य
3. मिश्रित वाक्य
4. मिश्रित वाक्य

ग. 1. शैशव 2. मातृत्व
3. गरीबी 4. भूख
5. राष्ट्रीयता 6. मनुष्यता

घ. 1. दरिद्रता बोली, देखो जी, मेरा कैसा प्रभाव है?
2. दोनों ने पूछा, तुम किसका साथ दोगे?
3. उनके लिए फल-पत्तियों में कोई सौंदर्य नहीं।
4. वह एक असहाय, निर्बोध, निर्धन लेकिन अभिमानी बालक था।

ङ. 1. समझा रहा था।
2. भर रही थी।
3. हो रहा था।
4. बेच चुका था।

Page-80

(कौशल-परीक्षण)

1. हाँ, मोहन जैसे बच्चे आज भी हमारे समाज में मौजूद हैं। ऐसे बच्चों की समस्याओं का समाधान हम उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करके कर सकते हैं। हम ऐसे विद्यार्थियों की मदद उन्हें कपड़े, भोजन एवं उनकी ज़रूरत की वस्तुओं को देकर कर सकते हैं। उनका विद्यालय में दाखिला करा सकते हैं। इस प्रकार वे अपनी शिक्षा पर भी ध्यान दे सकेंगे तथा अपने भविष्य को सँवार सकेंगे।

2. हाँ, मैंने 12-13 वर्ष के एक बालक को घर में काम करते देखा है। उस बालक को देखकर मुझे ऐसा लगा कि उसकी यह उम्र घर का काम करने की नहीं अपितु हमारी तरह विद्यालय में जाकर शिक्षा ग्रहण करने की है। उसे भी वे सब अधिकार प्राप्त होने चाहिए, जो मुझे प्राप्त हैं।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. बाल मज़दूरी एक अपराध

बाल मज़दूरी एक ऐसा कटु सत्य है जिससे भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया ग्रस्त है।

बाल मज़दूरी या बाल-श्रम बच्चों के द्वारा अपने बाल्यकाल में किया गया श्रम या काम है जिसके बदले उन्हें मज़दूरी दी जाती है। बाल मज़दूरी पूर्णतः गैर-कानूनी है। इस तरह की मज़दूरी को समाज के प्रत्येक वर्ग द्वारा निंदित भी किया जाता है। किंतु इसका ज़्यादातर अभ्यास हम समाज वाले ही करते हैं। बाल मज़दूरी बढ़ने के कई कारण हैं, जैसे-गरीबी, महँगे स्कूल एवं पढ़ाई के अन्य स्रोत, लड़का-लड़की में भेदभाव आदि। बाल मज़दूरी को रोकने के लिए आवश्यक है कि हम अपनी सोच को परिवर्तित करें। हम स्वयं ही अपने घर या दफ़्तर में किसी कम उम्र के बालक को काम पर न रखें। बाल मज़दूरी कराने वाले परिवारों को इसके अंजाम से अवगत कराना चाहिए। बाल मज़दूरी के खिलाफ़ कानूनी शिकायत दर्ज़ करनी चाहिए। सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों के लाख प्रयत्नों के पश्चात् अब इस दिशा में कमी दिखाई पड़ी है।

बच्चे ही देश के भविष्य को और बेहतर तथा नई ऊँचाइयों पर लेकर जाएँगे, यदि यही बच्चे छोटी उम्र में शिक्षा के बजाय लोगों के घर और दुकानों में काम करने लगेंगे तो देश कैसे उन्नत होगा? अतः हम सभी को मिल-जुलकर इस दिशा में प्रयास करने चाहिए।

2. अध्यापक स्वयं करवाएँ।

3. अगर रामकली कुएँ में न गिरती तो वह भी बड़ी होकर निर्धनता के चंगुल में फँस जाती। वह भी मोहन के समान ही इसी प्रकार का कुछ छोटा-मोटा सामान बेचकर जीवन-निर्वाह करती।

अर्धवार्षिक परीक्षा प्रश्न-पत्र-2

Page-82

खंड 'अ'

क. 1. डॉक्टर लैजियर और उनके साथियों का नाम जब तक दुनिया में विज्ञान का अस्तित्व है तब तक रहेगा।

2. डॉक्टर लैजियर पर अर्पित की गई श्रद्धांजलि का बड़ा महत्व है। यह उन सब असंख्य लोगों के लिए है जिन्होंने विज्ञान के लिए अपनी ज़िंदगी कुरबान कर दी।

3. 'दुश्मन' शब्द के प्रयोग के समय हमारे समक्ष उन लोगों के चेहरे आते हैं जो छल या बल से हमारा नुकसान करना चाहते हैं।

4. हमारे यथार्थ मूर्खता, बीमारी और गरीबी है ये तीनों दुश्मन मनुष्य जाति का नुकसान करते हैं।

5. लेखक ने मानवता के सच्चे उपायक उन लोगों को कहा है जो इन तीनों मुर्खता, बीमारी और गरीबी से संघर्ष करते हैं।

ख. 1. अ 2. द
3. अ 4. स
5. अ

खंड 'ब'

Page-83

ग. 1. अनंत 2. दाँत
3. संसार

घ. 1. ने, को 2. से
3. की, में

ङ. 1. भूख 2. उड़ान
3. दूरी

च. 1. पुत्र 2. सूर्य
3. अक्षि

छ. 1. यथार्थ 2. अशिष्ट
3. अशुदध

ज. 1. कुलीन 2. सहपाठि
3. सत्यनिष्ठ

झ. 1. मैं गंगा जल को ग्रहण करूँगा।
2. नेहा ने मुझे कहानी की पुस्तक दी।
3. तुम्हारी घर यह नहीं है।

ञ. 1. समान
2. अ. आई ब. ता

Page-84

ट. 1. आदरणीय 2. धार्मिक
3. दैनिक 4. रोगी
5. सुखी 6. भारतीय

ठ. रंग-ढंग बिगड़ना–तौर-तरीका बिगड़ना।

पैसे की अधिकता लोगों के रंग-ढंग बिगाड़ देती है।

इज्जत किरकिरी होना–अपमानित होना।

बेटे की कुकर्मो ने परिवार की इज्जत किरकिरी कर दी।

मन हरा होना–प्रसन्न होना।

बेटे की सफलता से माता-पिता का मन हरा हो गया।

खंड 'स'

ड. 1. चातक पुत्र को पोखरी के स्मरण से फुर हरी इसए आ गई क्योंकि उसने पोखरी के पानी में सूखे पत्ते, डंठल आदि गिरकर सड़ते देखा था। पानी गंदा था। उस पानी में लोग कपड़े निहारते हैं तथा कीड़े कुलबुलाते हुए साफ दिखाई देते हैं।

2. प्रस्तुत गद्यांश के पाठ का नाम कोटर और कुटीर है। इस गद्यांश के लेखक सियाराम शरण गुप्त है।

3. एक आदमी को गंदा पानी पीते देखकर चातक पुत्र को स्वयं पर इसके कारण गर्व हुआ कि आदमी गंदा पानी पीने हैं ये कैसे घृणित जीव है लेकिन हम स्वच्छ पानी घनश्याम से ग्रहण करते हैं।

4. चातक पुत्र अपने पिता से पोखरी का गंदा जल पीने से झिझक रहा था।

ढ. कर रहा .... बरसाता नहीं।

1. प्रस्तुत पद्यांश 'दानी सुमन' रचना का अंश है।

2. पद्यांश में सुमन को संबोधित किया गया है।

3. सूखे पुष्प की दशा मुरझाए हुए फूल के समान है। वह धरती पर पड़ा हुआ है। उसमें खुशबू नहीं है तथा भँवरें ने वहाँ आना बंद कर दिया है।

4. भ्रमर का वर्ण-विच्छेद– भ् + र + म + अ + र् + अ

5. मंजू का अर्थ मनोहर है।

Page-85

ण. 1. चातक पुत्र को उस समय अपनी आत्म-मर्यादा तथा आत्मभिमान का बोध हुआ जब उसने बुद्धन को अपने पुत्र गोकुल को यह कहते सुना कि भूख हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। जिस प्रकार चातक अपने प्राण देकर भी मेघ के सिवाय किसी दूसरे का जल लेने का व्रत नहीं तोड़ता, उसी तरह तू भी ईमानदारी की टेक न छोड़ना। सदा ऐसी ही मति रखना। चाहे कितनी बड़ी विपत्ति पड़े, अपनी नीयत न डुलाना।

2. मित्र का चुनाव करते समय हमें निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–

(i) वह विश्वासी हो। हँसमुख हो, ज्ञानी हो, साहसी हो तथा दुख के समय साथ देने वाला हो।

(ii) आपकी बुराइयों को बताकर उसे दूर करने में आपकी मदद करने वाला हो।

(iii) आपको गलत रास्ते पर जाने से रोकने की हिम्मत रखता हो। वह परोपकारी के साथ-साथ स्वार्थी न हो।

(iv) मित्र का आचरण सही हो, व ईमानदार, सत्यनिष्ठ हो।

3. 'करुणा की विजय' कहानी के शीर्षक की सार्थकता यह सिद्ध करती है कि अंत में करुणा ही विजयी होती है क्योंकि न्यायाधीश ने भी मोहन को अपराधी मानने से इंकार कर दिया। उसने सारा दोष व्यवस्थापक पर मढ़ दिया और कहा कि रामकली और मोहन की जिम्मेदारी उसकी थी। उसने असहाय, निर्धन, अभिमानी तथा निबोध-बालक के हाथ में शिशु का भार क्यों सौंपा।

4. न्यायाधीश ने मोहन को उसकी बहन की हत्या के लिए अपराधी इसलिए नहीं माना क्योंकि उसे अपराध करने का कोई सबूत नहीं मिला। सजा देने के लिए कोई कारण होना चाहिए।

5. मिट्टी ने गुल्लू से कहा कि ऋतुरानी आने वाली है। वह अपने साथ रंग-बिरंगे फूल देती है। तुम भी अपने लिए गुलाबी रंग के फूल माँग लेना जो तुम पर अच्छे लगते हैं। वह केवल स्वस्थ व प्रसन्न पौधों को ही फूल देती है। तुम अपना गुस्सा छोड़ दो। अपना जीवन बर्बाद मत करो। लड़के भी तुम्हें प्यारे-प्यारे फूलों के लालच में अपने घर लाए थे। तुम्हें खुश होकर सबका प्यार स्वीकार करना चाहिए। इस नई जगह पर तुम्हारा स्वागत है। मिट्टी रानी की इन बातों की सुनकर गुल्लू में जीने की चाह पैदा हो गई।

त. 1. 'स्वार्थमय सबको बनाया है यहाँ करतार ने।'
उपर्युक्त पंक्ति में महादेवी वर्मा सुमन को समझाते हुए कहती है कि तुमने अपना सर्वस्व जीवन खुशबू देने में व्यतीत कर दिया मगर जब तुम मुरझा गए, खुशबू देना बंद कर दिया और भौरों ने तुम्हारे पास आना बंद कर दिया तो सबने तुम्हारी तरफ से आँखें फेर ली। ईश्वर ने सभी को स्वार्थी बनाया है। मनुष्य तुम्हारे परोपकार को भूल चुका है। हे पुष्प! तुम दुखी मत होना।

अथवा

'मैं अबोध था, मैंने गलत बीज बोए थे, ममता को रोपा था, तृष्णा को सींचा था।'
उपर्युक्त पंक्तियाँ 'यह धरती कितना देती है!' में से ली गई है। इसमें कविवर सुमित्रानंदन पंत ने बचपन में अज्ञानवश पैसे मिट्टी में बो दिए थे। उन्होंने सोचा कि पैसों के पेड़ से बहुत सारे पैसे निकलेंगे और मैं मोटा सेठ बनूँगा। लेकिन वह या ध रती ने एक भी पैसा नहीं उगला। वे सोचने लगे कि यदि मैंने धरती में ममतारूपी पौधा लगाया होता है तो उसका प्रचार-प्रसार होता और लोगों में प्रेमभाव होता जिससे हमारा समाज, राष्ट्र मज़बूत होता। हमारा देश खुशहाल होता। लेकिन लोभ के कारण, न तो धरती ने पैसा उगला, न ही फसल हुई। अर्थात जिस भावना से कार्य किया जाना है फल भी उसी भावना के अनुरूप मिलता है।

थ. 1. भूख 2. अशुद्ध
3. अलग होना।

द. 1. 'करूणा की विजय' कहानी के लेखक जयशंकर प्रसाद हैं।

2. चातक के कुल का व्रत था कि वे घनश्याम के सिवाय किसी अन्य का जल नहीं पीते थे।
3. नन्हीं बुलबुल गुल्लू को गीत गाकर जगाती है।
4. खाना पकाने में पौधों की मदद किरण करती है।
5. सिरिल काले रॉबिन पक्षियों को बचाने में डॉ. राव की मदद कर रहा था।

खंड 'द'

ध. विद्‌यार्थी स्वयं करें।

न. विद्‌यार्थी स्वयं करें।

इकाई-III (आमोद-प्रमोद)

9 रामचरितमानस से चौपाइयाँ

(अभ्यास-उत्तर)

काव्य-बोध

Page-88 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. प्रस्तुत रचना तुलसीदास की है।
2. प्रस्तुत चौपाइयाँ 'रामचरित मानस के' किष्किंधाकांड से ली गई है।
3. इन चौपाइयों में महाकवि तुलसीदास ने सच्चे मित्र की ओर संकेत किया है।

(लिखित अभिव्यक्ति)

क.

1.	स	2.	अ
3.	अ	4.	स
5.	अ		

Page-89

ख.

1. सच्चा मित्र अपने पर्वत समान दुख को धूल के समान और मित्र के धूल समान दुख को पर्वत के समान मानता है।
2. कपटी मित्र की तुलना मूर्ख सेवक, कंजूस राजा व बुरी स्त्री से की गई है।
3. सच्चे मित्र अपने मित्र को बुरे मार्ग से हटाकर अच्छे मार्ग पर चलाने वाले तथा उसके अवगुणों को छिपाकर उसके गुण प्रकट करने वाले होने चाहिए।
4. ऐसे मित्र जो सामने मुख से मधुर वचन बोलते हो किंतु पीठ पीछे बुराई करते हो, उन मित्रों से दूर रहने में लाभ है क्योंकि ऐसे मित्रों की संगति करके व्यक्ति केवल पतन की ओर ही उन्मुख हो सकता है।
5. उक्त चौपाई का आशय यह है कि जो मित्र हमारे सामने मीठे वचन बोलते हो किंतु पीठ पीछे बुराई करते हो ऐसे साँप की तरह चाल चलने वाले मित्रों से दूर रहने में ही भलाई है। मूर्ख सेवक, कंजूस राजा, बुरी स्त्री और कपटी मित्र-चारों काँटों के समान पीड़ा देने वाले हैं। अत: इन सभी से दूर रहना अच्छा है।

(श्रुतलेख)

विद्‌यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

1. विद्‌यार्थी स्वयं करें।

2. विद्‌यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क. 1. दोस्त, सखा 2. शैल, गिरि
3. नृप, महीप 4. स्त्री, अबला
5. दास, नौकर

ख. 1. सुमित्र 2. गुण
3. सुख 4. कंजूस
5. कुपथ 6. अहित

Page-90

ग. 1. उपमा अलंकार
2. अनुप्रास अलंकार
3. अनुप्रास अलंकार
4. उपमा अलंकार

घ. 1. गुण 2. कृपण
3. वचन 4. शूल
5. हृदय 6. छली

(कौशल-परीक्षण)

1. विद्‌यार्थी स्वयं करें।
2. मनुष्य के जीवन में मित्रता एक बहुत ही मूल्यवान रिश्ता है। प्रत्येक व्यक्ति को जीवन की अच्छी-बुरी यादें, असहनीय घटनाएँ तथा सुख-दुख के पलों को साझा करने के लिए एक अच्छे और निष्ठावान मित्र की आवश्यकता होती है। अच्छे दोस्त एक-दूसरे की संवेदनाओं और भावनाओं को बाँटते हैं जो स्वस्थ होने और मानसिक संतुष्टि का अहसास लाता है। मित्र की आवश्यकता हमें इसलिए भी पड़ती है कि वे हमें कुमार्ग पर पैर रखने से सचेत करें। वे हमें उत्तमतापूर्वक जीवन-निर्वाह करने में हर तरह से सहायता करें।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. 'मित्रता' का तात्पर्य है किसी के दुख-सुख का सच्चा साथी होना। सच्चे मित्रों में कोई दुराव-छिपाव नहीं होता। वे निश्छल भाव से अपना सुख-दुख एक-दूसरे को कह सकते हैं। उनमें आपसी विश्वास होता है। विश्वास के कारण ही वे अपना हृदय दूसरे के समक्ष खोल पाते हैं। मित्रता शक्तिवध ‛क औषधि के समान है। एडिसन महोदय के अनुसार–'मित्रता खुशी को दुगुना करके और दुख को बाँटकर प्रसन्नता बढ़ाती है तथा मुसीबत कम करती है।' मित्र को पहचानने में जल्दी नहीं करनी चाहिए। सच्ची मित्रता वहीं दिखाई पड़ती है जहाँ सद्‌मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिले, गुणों-अवगुणों से परिचित कराया जाए तथा विश्वसनीयता हो। मित्र ऐसा हो जिसे हम अपने मन की बात बिना किसी संकोच के बता सके, जो कठिनाइयों और बाधाओं में हमारा साथ दे, जो सही समय पर हमें सही दिशा की ओर प्रवृत्त कर सके तथा जो हमारा विश्वासपात्र हो। ऐसे व्यक्ति के साथ मित्रता करके ही हम जीवन को सफल बना सकते हैं। सच्चे मित्र की मित्रता की पहचान तो विपत्ति पड़ने पर ही होती है। इसलिए सुकरात ने मनुष्य को सलाह दी है– ''मित्रता करने में शीघ्रता मत करो, पर करो तो अंत तक निभाओ।''
2. **सच्ची मित्रता पर लघु कथा**
राजा की सभा में राजा के द्‌वारा कही हुई गलत बात का उसने उल्लंघन किया और उसको नहीं माना तो राजा को क्रोध आया और राजा ने एक दोस्त को फाँसी पर चढ़ाने का आदेश दिया। जब उसको फाँसी पर चढ़ाने के लिए ले जा रहे थे तभी वह बोला कि फाँसी पर चढ़ाने से पहले मुझे अपने परिवार वालों से मिलने दिया जाए लेकिन राजा ने उसकी बात को मना किया तो उसके पास में खड़ा हुआ उसका एक और दोस्त राजा से बोला कि राजा जी अगर यह अपने परिवार से मिलकर 6 घंटे तक वापस ना आए तो इसके बदले में मुझे फाँसी पर चढ़ा दिया जाए। राजा उसकी बात से सहमत हुआ और उसको अपने परिवार से मिलने के लिए जाने दिया गया। अब दोस्त परिवार से मिलने

के लिए निकल पड़ा और मिलकर जब रास्ते से वापस आ रहा था तो उसको ठोकर लग गई और वह ज़मीन पर गिर पड़ा और उसे काफ़ी देर तक होश नहीं आया, इधर 6 घंटे बीत चुके थे। उसके दोस्त को उसके बदले फाँसी पर चढ़ाने के लिए ले जाया गया, इतने में दूसरे दोस्त को होश आया और वह देर से सभा में उपस्थित हुआ और राजा से बोला कि मैं आ गया हूँ, कृपया मुझे अब फाँसी पर चढ़ा दिया जाए लेकिन दूसरा दोस्त कहने लगा कि इसका समय अब गुज़र चुका है यानी 6 घंटे पूरे हो चुके हैं। अब मुझे ही फाँसी पर चढ़ाया जाए। दोस्तो! इस तरह की मित्रता को देखते हुए राजा को अपनी गलती का एहसास हुआ। उसने सोचा कि मैं यहाँ पर अपने फ़ायदे के लिए दूसरों के साथ गलत कर रहा हूँ, लेकिन ये दोनों दोस्त एक-दूसरे को बचाने के लिए अपनी जान की भी फिक्र नहीं कर रहे हैं। इसलिए राजा ने उन दोनों दोस्तों को छोड़ दिया और अपने स्वार्थ के लिए कभी भी दूसरों को नुकसान न पहुँचाने का निर्णय लिया।

10 नाच का संसार

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-97 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. नाच का आरंभ बच्चों ने उछलना-कूदना, किलकारियाँ मारना, ताथेई-ताथेई करना के रूप में किया होगा।

2. प्रशांत महासागर के टापुओं में शाम के बाद युवक-युवतियाँ खुली जगह में एकत्र होते हैं। आग जलाकर रोशनी की जाती है। सिर में ताड़ के पत्ते बाँध लिए जाते हैं, जिनमें उनके बाल इस तरह सजाए जाते हैं कि सींग के जैसे दिखाई पड़ें। पैर, घुटने और कलाई में भी छोटी-छोटी टहनियाँ बाँध ली जाती हैं। इसी प्रकार अपने पूर्व रूप में ही वहाँ नृत्य किया जाता था।

3. नाच का संबंध धर्म से है यह इस बात से पता चलता है कि सबसे पुराने धर्मों में नाचना पूजा का एक उत्तम रूप समझा जाता था और नाचते-नाचते भक्त लोग बेसुध होकर गिर पड़ते थे।

4. ग्रीक जाति में नाचने का शौक पाया जाता है। इस जाति के लोगों में सुंदरता की पूजा भी एक धर्म समझा जाता था। वे लोग शरीर के गठन, उसकी सुंदर गति, उसके एकत्व के उपासक थे। नाचने की कला का यूरोप में जो विकास हुआ है, उसके पिता ग्रीक ही समझे जाते हैं।

5. उत्तर भारत के उच्च घरानों में नाचने का रिवाज़ कम ही नहीं हुआ, वरन् वहाँ नाचना बुरा भी समझा जाता है।

6. स्पेन में बालेरी, इटली का टराँटेला, अंग्रेज़ों का हॉर्न पाइप, जापानी युवतियों का झूला-नृत्य, रूसवासियों का बैलेट और स्कॉटलैंड का तलवार नृत्य आदि विभिन्न देशों के प्रचलित नृत्य हैं।

(लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. स 2. ब
3. ब 4. ब
5. द

Page-98

ख. 1. पहले संसार भर के देशों और जातियों में नाच का ढंग एक ही था। इस बात का प्रमाण इस बात से दिया जा सकता है कि दक्षिणी समुद्र द्वीपवासी जुलू, मध्य अफ्रीका के हब्शी, ऑस्ट्रेलिया के आदिवासी और ब्राज़ील के इंडियन्स का स्थान एक-दूसरे से हज़ारों मील की दूरी पर है; समुद्र, पहाड़ एवं जंगल आदि द्वारा उन्हें एक-दूसरे से बिलकुल अलग कर दिया गया है, फिर भी इन सभी में प्रायः एक ही प्रकार का नाच होता है।

2. गोल्डकोस्ट की हब्शी स्त्रियाँ नृत्य इसलिए करती थीं कि युद्ध भूमि में गए उनके पति के हृदय में उत्साह का देवता जा बसे।

3. चैतन्य देव के अनुयायियों के हरि-कीर्तन की विशेषता यह है कि वे खूब नाचते थे और बेहोश होने में गर्व अनुभव करते थे।

4. नाच का संबंध लड़ाई से भी है। रेड इंडियंस आज भी अपने शरीर को पंखों से, मारे गए दुश्मनों की खोपड़ियों से ढक कर और अपने चेहरे को पोतकर युद्ध-नृत्य करते हैं। जुलू-योद्धा भी युद्ध-नृत्य के उपासक समझे जाते हैं। फ्रांस की राज्य क्रांति के समय एक तरह का नाच चला था, जिसने लोगों के हृदय में विद्रोह की भावना का बीज सफलतापूर्वक बोया था। आज भी नेपल्स में दो प्रकार के युद्ध-नृत्य होते हैं।

5. संसार भर के सभ्य देशों में नृत्य से जुड़ी यह विचित्र प्रवृत्ति देखी जा रही है कि वे अपनी पुरानी नृत्य कला के उद्धार में लगे हुए हैं। सभ्य शिरोमणि इंग्लैंड में इसके लिए बड़ा प्रयत्न हो रहा है कि वहाँ के पुराने देहाती नाचों का सभ्य लोगों में भी प्रचार किया जाए। हमारे देश में भी ऐसा प्रयत्न शुरू हुआ है। संसार को भारतीय नृत्य कला पर मुग्ध कराने वाले नटराज उदयशंकर ने इसके लिए बहुत कुछ किया है। कवींद्र-रवींद्र के शांति निकेतन में भी प्राचीन नृत्यों के उद्धार के लिए पूरी चेष्टा हो रही है। अब सभ्य घरानों की स्त्रियाँ भी नाचने की ओर झुकी हैं।

6.
- सूर्य नृत्य– सूर्य नृत्य उत्तरी अमेरिका के इंडियंस द्वारा किया जाता है। नाचने वाला भक्त सूर्य की ओर एकटक देखता हुआ नाचता है और नाचते-नाचते ऐसा मस्त हो जाता है कि अपने शरीर के मांस को नोच फेंकता है।
- वर्षा वैद्य– मध्य एशिया के कुछ लोग वर्षा वैद्य नाम से मशहूर हैं। जिस तरह बीमारियों को अच्छा करने के लिए वैद्य होते हैं, उसी तरह वर्षा न होने पर वर्षा वैद्य लोग इकट्ठे किए जाते हैं। ये वैद्य खूब नाचते हैं और यह समझा जाता है कि इनके नाचने से वर्षा होगी। आरिजोना के इंडियंस में भी ऐसे वैद्य होते हैं।
- बॉल डांस– यूरोप में हर सभ्य पुरुष के लिए नाचना अति आवश्यक समझा जाता है। एक स्त्री व पुरुष की जोड़ी मिलाकर वहाँ जो नाच करती है, उसे बॉल-डांस कहते हैं।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

अध्यापक स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क.	1.	भाववाच्य	2.	भाववाच्य
	3.	कर्तृवाच्य	4.	कर्तृवाच्य
	5.	कर्मवाच्य		

Page-99

ख.	1.	सर्वनाम	सार्वनामिक विशेषण
	2.	सर्वनाम	सार्वनामिक विशेषण
	3.	सार्वनामिक विशेषण	सर्वनाम
	4.	सर्वनाम	सार्वनामिक विशेषण

ग. नृत्य – नाच

कर्ण – कान

सूर्य – सूरज

मौक्तिक – मोती

सर्प – साँप

वर्षा – बरसात

भक्त – भगत

दंत – दाँत

घ.	1.	धार्मिक	2.	प्रमाणित
	3.	मनुष्यता	4.	एकत्व
	5.	रंगीन		

ङ. संसार किलकारियाँ

प्रशांत	बाँध	टहनियाँ
पंक्ति	तालियाँ	संबंध
स्त्रियाँ	बंगाल	पंथ
दाँत	रानियाँ	शांति
किंतु		

Page-100 (कौशल-परीक्षण)

1. विद्‌यार्थी स्वयं करें।
2. विवाह जैसे अवसरों पर ढोल-बाजे की ताल पर संबंधी, मित्र नाचते हैं। उनमें से कुछ ऐसे भी होते हैं जिन्हें नृत्य नहीं आता। उनका नृत्य अत्यंत हास्यास्पद होता है, फिर भी वे मस्त होकर नाचते हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि वे दिल से नाचते हैं। वे उस पल को महसूस करते हैं, जिसे वे अपने नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं।
3. विद्‌यार्थी स्वयं करें।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्‌यार्थी स्वयं करें।
2. विद्‌यार्थी स्वयं करें।
3. विद्‌यार्थी स्वयं करें।
4.

	प्रसिद्‌ध नर्तक	**नृत्य शैली**
क.	प्रोतिमा बेदी	ओडिसी
ख.	संयुक्ता पाणिग्रही	ओडिसी
ग.	राजरेड्डी राधरेड्डी	कुचिपुड़ी
घ.	यामिनी कृष्णमूर्ति	कुचिपुड़ी
ङ.	सितारा देवी	कत्थक
च.	बिरजू महाराज	कत्थक
छ.	मकरध्वज दारोघा	छाऊ
ज.	हेमा मालिनी	भरतनाट्यम/ मोहिनीअट्टम
झ.	सोनाली मानसिंह	ओडिसी/ भरतनाट्यम
ञ.	रुक्मिणी देवी अरुण्डेल	भरतनाट्यम/ कथकली

5. **भारतीय नृत्य शैली और पश्चिमी नृत्य शैली**

भारतीय नृत्य उतने ही विविधतापूर्ण हैं जितनी हमारी संस्कृति। हाल ही में बॉलीवुड नृत्य की एक नई शैली लोकप्रिय होती जा रही है जो भारतीय सिनेमा पर आधारित है। इसमें भारतीय शास्त्रीय, भारतीय लोक और पाश्चात्य शास्त्रीय तथा पाश्चात्य लोक का समन्वय देखने को मिलता है। पश्चिम में उच्चरित शब्दों, संगीत और नृत्यों के रंगमंचीय तत्वों का स्वतंत्र रूप से विकास ड्रामा, ओपेरा और नृत्य नाटिका 'बैले' के तौर पर हुआ, लेकिन भारत में मंचीय परंपरा तीनों स्वरूपों को एक साथ ही अपने नाटकों में सम्मिलित करती रही।

	भारतीय नृत्य शैलियाँ		पाश्चात्य नृत्य शैलियाँ
क.	ओडिसी	क.	टैंगों
ख.	कुचिपुड़ी	ख.	साम्बा
ग.	मणिपुरी	ग.	रूम्बा
घ.	कथकली	घ.	हॉर्न पाइप
ङ.	भरतनाट्यम	ङ.	होरा
च.	रासलीला	च.	बालेरी
छ.	रौतनाचा	छ.	पोल्का
ज.	घूमर	ज.	निगुबेट

11 पंचलाइट

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-106 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. पैट्रोमैक्स पंद्रह महीने के दंड-जुरमाने के पैसों को जमा करके खरीदा गया।
2. पैट्रोमैक्स देखकर टोले भर के लोग जमा हो गए। औरत-मर्द, बूढ़े-बच्चे सभी काम-काज छोड़कर दौड़े आए।
3. पंचलाइट को जलाने का प्रश्न उठ खड़े होने के कारण गाँव के लोग उदास हो गए।
4. गोधन ने गरी के तेल का प्रयोग करके पंचलाइट जलाई।

(लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. ब 2. द
3. अ 4. द
5. स 6. स
7. स

Page-107

ख. 1. पंचलाइट न जलने पर महतो टोली के लोग हताश एवं निराश हो गए। वे दूसरी टोली के लोगों से भी नहीं कह सकते थे क्योंकि यह उनकी इज़्ज़त का सवाल था। चारों ओर उदासी का माहौल बन गया था। पंचों के चेहरे उतर गए थे। अन्य टोली के लोगों द्वारा उनका मज़ाक उड़ाए जाने की खबर सुनकर वे और अधिक दुखी हो गए थे।

2. गोधन का हुक्का-पानी इसलिए बंद किया गया था क्योंकि उसने टोली के पंचों को पान-सुपारी खाने के लिए कुछ भी नहीं दिया था। वह उनकी परवाह नहीं करता था। उस पर वह गाँव में सिनेमा का गीत गाकर आँखों से इशारा भी करता था।

3. ''जाति की .... जा रही है।'' सरदार ने यह कथन तब कहा जब कनेली ने गोधन का नाम लेते हुए कहा कि वह पंचलाइट जलाना जानता है। किंतु पंचों ने एकमत होकर उसका हुक्का-पानी बंद किया था। यह कथन इसलिए कहा गया क्योंकि पंचलाइट जलाना गोधन को माफ़ करने से अधिक महत्वपूर्ण था। गाँव भर में महतो टोली की इज़्ज़त गोधन को रिहा करने से अधिक महत्वपूर्ण थी।

4. महतो टोली ने उस समय अपने सरदार, दीवान तथा पंचों की बुद्धि पर अविश्वास प्रकट किया जब गोधन

ने पूछा, ''इसपिरिट कहाँ है? बिना इसपिरिट पंचलैट कैसे जलेगा?''

5. पंचायत से निष्कासित गोधन उस समय सबका प्रिय हो गया जब उसने महतो टोली की इज़्ज़त बचाते हुए पंचलाइट जला दी। उसका सम्मान इस प्रकार हुआ कि सरदार ने उसे प्यार से बुलाकर कहा, ''तुमने जाति की इज़्ज़त रखी है। तुम्हारे सात खून माफ़। खूब गाओ सलीमा का गाना।'' वहीं साथ-ही-साथ गुलरी काकी ने भी उसे रात के भोजन के लिए आमंत्रित किया।

ग. 1. महतो टोली की कीर्तन मंडली के मुख्य गायक ने, अपने भगतिया पक्ष के लोगों से कहा।

2. पंचों ने, दीवान से कहा।

3. गोधन ने, मुनरी से कहा।

4. गुलरी काकी ने, गोधन से कहा।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. विद्यार्थी स्वयं करें।

Page-108 (भाषा-ज्ञान)

क. 1. पैट्रोमैक्स 2. केरोसिन

3. स्प्रिट 4. सिनेमा

5. चँवर 6. जलाना

ख. 1. संबंध कारक

2. अपादान कारक

3. कर्ता कारक

4. कर्म कारक

5. अधिकरण कारक

ग. 1. भूतकाल –

अंग्रेज़ बहादुर के राज में पुल बनाने के पहले बलि दी जाती थी।

2. वर्तमान काल –

टोले भर के लोग जमा हो जाएँ।

3. भविष्यत काल –

कल से गाँव में मुँह दिखाना मुश्किल हो जाएगा।

घ. 1. रोमांचित 2. बड़ी चादर

3. योग्य 4. गाँव संबंधी

5. काँच, टिन या मिट्टी से बना बंद छोटा पात्र, जिसमें मिट्टी का तेल भरकर तथा ढक्कन में तागे या सूती कपड़े की बत्ती डालकर प्रकाश करने के लिए प्रयोग किया जाता है।

ङ. 1. व्यंग्य वचन बोलना –

रामू अपनी पत्नी को हर छोटी-छोटी बात पर ताना मारता है और खुद कुछ काम नहीं करता।

2. आमना-सामना होना –

गली के नुक्कड़ पर बहुत दिनों बाद रमेश बाबू और बृजेश बाबू की आँखें चार हुईं।

3. जाति से बाहर करना –

पंचों ने मिलकर गोधन का हुक्का-पानी बंद कर दिया था।

4. सभी गुनाह माफ़ करना –

गोधन के पंचलाइट जलाने और जाति की इज़्ज़त रखने पर उसके सात खून माफ़ कर दिए गए।

5. मान बनाए रखना –

गोधन ने महतो टोली की इज़्ज़त रख ली।

Page-109

(कौशल-परीक्षण)

1. किसी भी वस्तु को खरीदने से पूर्व उसके बारे में जानकारी होना इसलिए आवश्यक है क्योंकि बिना उस वस्तु को समझे हम उसे सुचारू रूप से नहीं चला सकते। ठीक उसी

प्रकार जिस प्रकार से महतो टोली द्वारा पंचलाइट लाना, किंतु उसे जलाने का ज्ञान न होना। वस्तु के बारे में जानकारी होने पर हम उस वस्तु का ठीक से प्रयोग कर सकते हैं अन्यथा यह डर बना रहता है कि हम उसका गलत तरीके से प्रयोग न कर बैठें और वह खराब न हो जाए।

2. हाँ, मैं इस कथन से सहमत हूँ। व्यक्ति को ऐसे किसी भी अवसर से नहीं चूकना चाहिए जहाँ उसे ज्ञान की प्राप्ति हो सकती हो। सभी प्रकार की भौतिक संपत्तियाँ समय पर नष्ट हो जाती हैं, किंतु ज्ञान रूपी धन हर स्थिति में मनुष्य के पास रहता है। ज्ञान के द्वारा ही व्यक्ति सभी प्रकार के द्वंद्वों एवं उलझनों से बाहर निकल सकता है। ज्ञान हमें संकट के प्रत्येक क्षण में जूझने का अवसर प्रदान करता है। ज्ञान के अभाव में शक्ति का होना या न होना बराबर होता है। उदाहरण के लिए मान लिया जाए कि कोई उपार्जन अथवा उत्तराधिकार में बहुत-सा धन प्राप्त कर लेता है या किसी संयोगवश उसे अकस्मात् मिल जाता है, तो क्या यह माना जा सकता है कि वह धन-शक्ति वाला व्यक्ति बन गया है। धन में स्वयं कोई शक्ति नहीं होती, वह शक्ति तभी बन पाती है जब उसके साथ उसके प्रयोग अथवा उपयोग में ज्ञान का समावेश होता है। अतः ज्ञानवान व्यक्ति ही शक्ति संपन्न माना जा सकता है। इसलिए ज्ञान जहाँ कहीं से भी प्राप्त हो, हमें उसे ग्रहण करना चाहिए।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्यार्थी स्वयं बताएँ।

2. **भारतीय गाँव**

भारत एक कृषि प्रधान देश है। प्राचीन काल से ही हमारे देश की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि ही रहा है। कृषि पर हमारी निर्भरता के साथ ही यह भी तथ्य हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है कि देश की सत्तर प्रतिशत से भी अधिक जनसंख्या गाँवों में ही निवास करती है। किसी कवि ने सत्य ही लिखा है– 'है अपना हिंदुस्तान कहाँ, यह बसा हमारे गाँवों में।' गाँवों में प्रकृति का सौंदर्य बिखरा पड़ा है। हरे-हरे खेत, कल-कल करती नदियाँ, कुओं की रहट पर औरतों की खिलखिलाहट, गायों के पीछे दौड़ते बच्चे, दूध-दही और घी की बहुलता। भारत के गाँव उन्नत और समृद्ध थे। वहाँ कुटीर उद्योग फलते-फूलते थे। किंतु समय बीतने के साथ नगरों का विकास होता गया और गाँव पिछड़ते गए। भारत के गाँवों की दशा अब दयनीय है। इसका मुख्य कारण अशिक्षा है। अशिक्षित होने के कारण ग्रामीण अत्यधिक रूढ़िवादी और अंधविश्वासी हैं। किसान प्रकृति पर निर्भर रहते हैं और सूखा तथा बाढ़ की चपेट में आकर नुकसान उठाते हैं।

गाँवों में कृषि कार्य पर पूरी तरह निर्भरता अब परिवार की ज़रूरतों को पूरा नहीं कर पाती। जनसंख्या की निरंतर वृद्धि से खेत छोटे-छोटे हो रहे हैं। अतः कृषि के आधुनिक साधन प्रयोग नहीं हो पाते। यह भी कहा जा सकता है कि गाँववासी नगरों की चकाचौंध से प्रभावित होकर शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। महात्मा गांधी ने कहा था– 'भारत की आत्मा गाँवों में बसती है।' गाँवों की समस्याओं का समाधान कर इनको विकसित एवं खुशहाल बनाए जाने की आवश्यकता है। पिछले कुछ वर्षों में बढ़ते औद्योगिकीकरण के कारण शहरीकरण पर ज़ोर दिया जा रहा है एवं विशेष आर्थिक क्षेत्रों की स्थापना करने के लिए गाँवों की ज़मीन का अधिग्रहण किया जा रहा है। शहरीकरण के बदले यदि गाँवों के आधुनिकीकरण पर ज़ोर दिया जाए तो गाँवों के विकास को सही अर्थों में गति मिल सकती है। गाँव के सौंदर्य को कायम रखते हुए ग्रामीण जीवन को खुशहाल करने की आवश्यकता है।

3. विद्यार्थी अपने बड़ों से स्वयं जानकारी एकत्रित करें।

4. यदि गोधन पंचलाइट न जला पाता तो पंचों द्वारा उसकी सज़ा को और सख्त कर दिया जाता।

5. गुलरी काकी : गोधन बेटा, हम सभी को तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है।

गोधन : कैसी आवश्यकता काकी और मैं क्यों किसी की आवश्यकता की पूर्ति करूँ। मेरे साथ कौन-सा पंचों द्वारा न्याय किया गया।

गुलरी काकी : ऐसा मत कहो बेटा, महतो टोली की इज़्ज़त अब तुम्हारे ही हाथ में है। सुना है कि तुम पंचलाइट जलाना जानते हो। यदि आज पंचलाइट नहीं जलाई गई तो महतो टोली अन्य सभी टोलियों के समक्ष मज़ाक का पात्र बन जाएगी।

गोधन : ठीक है गुलरी काकी, अगर आप इतना कह रही हैं तो मैं अवश्य चलूँगा। (दोनों पंचलाइट जलाने के लिए निकल गए)

12 मेरी थाई यात्रा

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-117 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. थाईलैंड में अप्रैल, 1961 में वियतनाम के विरुद्ध अमेरिकी युद्ध में भाग लेने वाले लगभग सौ सैनिकों की टोली यहाँ आराम करने आई, तभी से यह स्थल पर्यटन-स्थल के रूप में प्रसिद्ध हो गया।

2. सड़क यात्रा के दौरान लेखिका ने ये विशिष्ट बातें महसूस कीं, कि उन्होंने बस, गाड़ी या दोपहिया वाहन वालों को हॉर्न बजाते नहीं सुना। वहाँ के लोग ट्रैफ़िक नियमों का पालन बखूबी करते थे। लाल बत्ती पर ट्रैफ़िक पुलिस वाला एक वृद्ध व्यक्ति को सड़क पार करा रहा था।

3. बैंकॉक में लेखिका ने बौद्ध मंदिर के दर्शन किए। उन्होंने वहाँ महात्मा बुद्ध की स्वर्ण निर्मित बैठी तथा लेटी हुई मूर्तियों को देखा। लेखिका ने वहाँ सर्वाधिक प्रसिद्ध मरीन पार्क एवं सफ़ारी वर्ल्ड देखा। मरीन पार्क में 'ओरैंगटन शो', 'सी लॉयन शो', 'डॉल्फिन शो' देखे। पट्टया में समुद्री यात्रा के दौरान लेखिका ने यह देखा कि गाइड का हिंदी भाषा के प्रति रुझान था, जिसे देखकर उन्हें गर्व महसूस हुआ। मरीन पार्क में उन्होंने शाकाहारी भोजन किया। सफ़ारी वर्ल्ड में लेखिका ने एशिया और अफ्रीका के लगभग सभी वन्य जीवों को देखा।

4. कोरल आइलैंड में समुद्री रेत का रंग सफ़ेद था।

5. अनुमान के मुताबिक हर साल थाईलैंड आने वाले पर्यटकों की संख्या लगभग 5 लाख तक है।

(लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. द 2. ब
3. अ 4. स
5. ब

ख. 1. अलकाज़ार केबरट नृत्य-संगीत से सजा पट्टया का प्रमुख कार्यक्रम है। पट्टया आने वाले इस प्रस्तुति को अवश्य देखते हैं। इस कार्यक्रम की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें काम करने वाली खूबसूरत अभिनेत्रियाँ पुरुष होते हैं।

2. नोंगनूच गाँव में थाई संस्कृति विशेष रूप से देखने योग्य थी। वहाँ बहुत-सी नृत्य शैलियाँ हैं जो नाटक से जुड़ी हुई हैं। कार्यक्रम की प्रस्तुति में कलाकार भारी परिधान और मुखौटों को धारण करते हैं।

3. लेखिका ने जब अंडर वॉटर वर्ल्ड तथा थ्री डी आर्ट गैलरी देखी तब उन्हें पट्टया आना सार्थक लगा। लेखिका को ऐसा इसलिए लगा क्योंकि जब उन्होंने अंडर वॉटर वर्ल्ड में जलीय जीवों को निकटता से देखा तथा उनके अलग संसार को जाना तब उन्हें मानव बुद्धि की जीत एवं उसकी सोच की क्षमता पर खुशी हुई कि कभी वह समुद्र की गहराई में उतरती है तो कभी अंडर वॉटर वर्ल्ड जैसे पर्यटक स्थल बनाकर जलीय जीव-जंतुओं के संसार में भ्रमण कर आती है। वहीं थ्री डी आर्ट गैलरी में दीवारों पर बने सुंदर दृश्य, मानवीय आकृतियाँ, आकर्षक पेंटिंग देखकर लेखिका दंग रह गई।

4. थाईलैंड में हिंदी भाषा की स्थिति यह है कि वहाँ आने वाले हिंदुस्तानी पर्यटकों के कारण थाई लोग हिंदी सीखने में रुचि लेने लगे हैं।

5. बैंकॉक के बौद्ध मंदिरों में जाने से पूर्व कपड़ों का विशेष रूप से ध्यान रखना पड़ता है।

6. थाईवासी भारतीय सभ्यता से परिचित हैं यह इन बातों से ज्ञात होता है कि अलकाजार केबरट कार्यक्रम के दौरान लेखिका को एक जगह हिंदी फ़िल्मी गीत पर नृत्य की प्रस्तुति से देश का आभास हुआ; वहीं थाई लोग वहाँ आने वाले हिंदुस्तानी पर्यटकों के कारण हिंदी सीखने में रुचि लेते हैं तथा विदेश में भी राजमा-चावल और पंजाबी खीर से भारतीयता का अहसास होता है।

7. थाई यात्रा से लौटते समय लेखिका को इस बात ने सबसे अधिक परेशान किया कि थाई करेंसी 'बाह्त' के समक्ष रुपये की स्थिति कमज़ोर थी क्योंकि वहाँ सौ बाह्त देने का अर्थ है, भारत के दो सौ रुपये देना।

Page-118

ग. 1. ✗ 2. ✓

3. ✗ 4. ✓

5. ✓ 6. ✗

घ. 1. डीप सी वॉकिंग के दौरान लेखिका ने 5 से 6 लोगों के समूह में समुद्र में नीचे उतरकर सैर की। उस समय लेखिका के इर्द-गिर्द ढेरों जलीय जीव थे, कोरल थे। छोटी-छोटी मछलियाँ काफ़ी मात्रा में थीं, जिन्हें लेखिका ने दस्ताना पहने हाथ से ब्रेड खिलाई।

2. गाइड ने यह जानकारी दी कि पट्टया बहुत पहले मछुआरों का गाँव हुआ करता था। अप्रैल, 1961 में वियतनाम के विरुद्ध अमेरिकी युद्ध में भाग लेने वाले लगभग सौ सैनिकों की टोली यहाँ आराम करने आई तभी से यह स्थल पर्यटन-स्थल के रूप में प्रसिद्ध हो गया।

3. लेखिका ने कोरल आइलैंड पर समुद्र तट पर बैठने, समुद्र के बीच जाकर भीगने, लहरों से खेलने, गोता लगाने आदि का आनंद उठाया।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. विद्यार्थी स्वयं करें।

Page-119 (भाषा-ज्ञान)

क. 1. जातिवाचक संज्ञा
2. समुदायवाचक संज्ञा
3. व्यक्तिवाचक संज्ञा
4. जातिवाचक संज्ञा
5. भाववाचक संज्ञा
6. भाववाचक संज्ञा

ख. 1. य् + आ + त् + र् + आ
2. श् + उ + द् + ध् + अ
3. न् + ऋ + त् + य् + अ
4. व् + इ + द् + ए + श् + अ

ग. 1. रमा के पास सुंदर घड़ी है।
2. राजेश सुरेश की तरह मासूम नहीं है।
3. रमन दीवार के ऊपर बैठा है।
4. घर के बाहर कोई खड़ा है।
5. नमक के बिना हर व्यंजन फीका है।
6. उसके द्वारा किया गया काम अच्छा होता है।
7. सच्चाई के सामने झूठ टिक नहीं सकता।

घ.

2.	निकटतर	निकटतम
3.	लघुतर	लघुतम
4.	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम
5.	सुंदरतर	सुंदरतम
6.	गुरुतर	गुरुतम
7.	तीव्रतर	तीव्रतम
8.	अधिकतर	अधिकतम

Page-120

ङ. 1. क्या! 2. हाय राम!
3. छिः-छिः 4. शाबाश!
5. बचो! 6. बहुत अच्छा!
7. हे! भगवान 8. ओह माँ!

च. 1. सकर्मक क्रिया
2. अकर्मक क्रिया
3. सकर्मक क्रिया
4. अकर्मक क्रिया
5. अकर्मक क्रिया

(कौशल-परीक्षण)

1. हाँ, मैं सड़क पर चलते समय सड़क के नियमों का पालन करती/करता हूँ। थाईलैंड में अनुशासित यातायात से मैंने यह सीखा कि हमें भी भारत में इस प्रकार की व्यवस्था अपनानी चाहिए। हम भारत में इसे तभी लागू कर सकते हैं जब प्रत्येक नागरिक सड़क नियमों का पालन करना अपना कर्तव्य समझे। केवल सरकार द्वारा इसे लागू करने से तब तक व्यवस्था नहीं सँभल सकती जब तक कि प्रत्येक नागरिक इसके प्रति अपनी ज़िम्मेदारी न समझे।

2. विद्यार्थी स्वयं करें।

Page-121

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. विद्यार्थी स्वयं करें।

3. **मेरी पहली हवाई यात्रा**

पहली बार हवाई जहाज पर यात्रा करने का सुखद सौभाग्य प्राप्त होने पर मैं अपने पिता जी के साथ एयरपोर्ट पहुँचा तो देखा कि हम समय से ढाई घंटे पहले पहुँच गए। कुछ देर तक मैं एयरपोर्ट की सुंदरता निहारता रहा। कुछ समय पश्चात जब विमान की उद्घोषणा हुई तो मैं ज़रूरी सुरक्षा प्रक्रिया को निबटाने के बाद पहली बार विमान में चढ़ने की उत्सुकता को अपने भीतर छिपाए, सधे हुए कदमों से आगे बढ़ चला। कई सीधे और

घुमावदार रास्तों पर चलते हुए जब मैंने पहली बार किसी विमान में कदम रखा तो दिल से अपने इष्टदेव का नमन किया। कुछ देर में एयर होस्टेस आ गई थी। पहले तो उन्होंने सबकी सीट बेल्ट देखी और फिर स्वयं डेमो दिया कि किस तरह से सीट बेल्ट बाँधी जाती है। उनकी एक बात जो कि रिकॉर्डेड बोली जाती थी वह बड़ी अच्छी लगती थी कि दूसरों की मदद करने से पहले अपना मास्क सही तरह से लगाएँ। रनवे पर जब जहाज उड़ा तो मुझे बड़े झूले जैसा लगा। धीरे-धीरे जहाज उड़ान भरने लगा तथा जहाज से बाहर का नज़ारा दूर होता चला गया। मैं पहली बार हवाई जहाज की यात्रा कर रहा था और विंडो सीट पर बैठकर बहुत आनंद आ रहा था। इसलिए अपने आने या जाने के दौरान मुझे नींद ही नहीं आई। विमान का भीतरी दृश्य देश के विकास की सच्ची तसवीर था। इस प्रकार देखते-ही-देखते मैं अपने गंतव्य स्थान तक पहुँच गया। कुछ घंटों का सफ़र ऐसा लगा जैसे पलक झपकते ही पूर्ण हो गया हो। इस प्रकार मेरी हवाई यात्रा अत्यंत सुखमयी तथा रोमांचकारी रही।

4. विद्यार्थी स्वयं करें।

सुझावित आवधिक प्रश्न-पत्र–3

खंड 'अ'

Page-124

क. 1. हाल में हुए सर्वे में आया है कि बर्गर संस्कृति में पले अधिकतर अमेरिका युवाओं ने अब स्वीकार कर लिया है कि अच्छे स्वास्थ्य के लिए उचित, संतुलित आहार-विहार के अलावा कोई विकल्प नहीं।

2. रोटी को नौकरानी और पिज्जा को महारानी की नज़र से देखने वालों को सोच बदलनी होगी। पानी की जगह कभी कोल्ड ड्रिंक नहीं ले सकता। उन्हें इस बात की समझ होनी चाहिए।

3. प्रस्तुत गद्यांश में अमेरिका युवाओं की सोच के बारे में बात की गई है।

4. गद्यांश का उचित शीर्षक 'स्वस्थ ही धन है।'

खंड 'ब'

ख. 1. स्त्री, वनिता, महिला

2. गिरि, नग, पहाड़, भूधर

3. सखा, दोस्त, साथी, सहचर

ग. 1. कंजूस, 2. गुण

3. मन

घ. 1. प्रमाण + इत

2. एक + त्व

3. धर्म + इक

ङ. 1. निजवाचक सर्वनाम

2. पुरुषवाचक सर्वनाम

च. 1. सकर्मक 2. सकर्मक

3. सकर्मक

छ. 1. जातिवाचक संज्ञा

2. भाववाचक संज्ञा

3. व्यक्तिवाचक संज्ञा

ज. 1. पुल्लिंग 2. पुल्लिंग

3. स्त्रीलिंग

खंड 'स'

झ. 1. चारों ओर उदासी छाने का कारण था कि वहाँ पर उपस्थित लोगों में से किसी को पंचलैट जलाना नहीं आता था।

2. प्रस्तुत गद्यांश पंचलाइट से लिया गया है।

3. पंचलैट आने की खुशी में सबने ढिबरी नहीं जलाई थी, क्योंकि वे

सभी पंचलाइट की रोशनी देखना चाहते थे।

4. नौजवान ने आकर सूचना दी कि राजपूत टोली के लोग हँसते-हँसते पागल हो रहे हैं। कहते हैं, कान पकड़कर पंचलैट के सामने पाँच बार उठो बैठो, तुरंत जलने लगेगा।

ञ. 1. गोल्ड कोस्ट की हब्शी स्त्रियां इसलिए नृत्य करती हैं कि युद्ध भूमि में गए हुए उनके पति के हृदय में उत्साह का देवता जा बसे।

2. सच्चे मित्र को ईमानदार होना चाहिए। उसका आचरण अच्छा होना चाहिए। वह विश्वासी तथा साहस होना चाहिए। दुख के समय साथ देने वाला होना चाहिए।

3. गोधन का हुक्का-पानी इसलिए बंद कर दिया गया क्योंकि उसने टोली को पंचों को पान-सुपारी खाने के लिए कुछ भी नहीं दिया था। वह उनकी परवाह नहीं करता था। उस पर वह गाँव में सिनेमा का गीत गाकर आँखों से इशारा भी करता था।

ट. जे न मित्र .... मेरु समाना।

उपर्युक्त चौपाइयाँ 'रामचरित मानस' के किष्किंधाकांड से ली गई है। इन चौपाइयों में तुलसीदास जी अच्छे एवं सच्चे मित्र में क्या-क्या गुण होने चाहिए? उनके बारे में बता रहे हैं।

वे कहते हैं जो मित्र अपने मित्र के दुख को देखकर दुखी नहीं होता, उस मित्र को देखने मात्र से भी पाप लगता है। अतः सच्चा मित्र अपने दुख को धूल के समान समझता है तथा मित्र के दुख को बड़ा (पहाड़) के समान समझता है। वह मित्र के दुख को दूर करने की कोशिश करता है।

ठ. 1. द   2. ब
3. अ   4. स

ड. विद्यार्थी स्वयं करें।

13

इकाई-IV (प्रखर)

हिमालय और हम

(अभ्यास-उत्तर)

काव्य-बोध

Page-129 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. कविता में हिमालय के लिए इन विशेषणों का प्रयोग किया गया है– गिरिराज, ताज, पर्वतराज, अटल, अडिग, अविचल एवं अमर।

2. उदय तथा अस्त को समान भाव से हिमालय पर्वत स्वीकारता है।

3. हिमालय की छाया की तुलना सागर से और गंगा की चादर से की गई है।

4. गंगा का जल पीने वाला व्यक्ति दुख में भी मुसकाता है।

5. कविता का भाव यह है कि प्रकृति हमें प्रत्येक रूप में जीवन का सुंदर संदेश देती है। अपने हिमालय रूप में वह हमें स्वाभिमान का, सुख-दुख में समान भाव से रहने का, आध्यात्मिकता का, निडरता और गौरव का पाठ पढ़ाती है।

(लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. स   2. स

3. अ 4. द

Page-130

ख. 1. कवि के अनुसार सूर्योदय की पहली लालिमा हिमालय पर्वत को चूमती है।

2. हिमालय से टकराने पर बादल स्वयं ही पानी हो जाते हैं।

3. हिमालय समस्त भारत का मुकुट है जो पर्वतों की श्रृंखलाओं में प्रमुख है। यह भारत का प्रहरी (रक्षक) पर्वत है। यह भारत में गंगा नदी का उद्‌गम स्रोत है। इसकी छाया में रहने वाला प्रत्येक भारतवासी मस्तक उठा कर रहता है। इस पर्वत से प्रत्येक भारतवासी को यह संदेश प्राप्त होता है कि हिमालय की भाँति हमारे भीतर भी आत्माभिमान, गौरव तथा निडरता का भाव उत्पन्न हो। गिरिराज हिमालय से निकलने वाले गंगाजल को पीकर व्यक्ति के दुख दूर हो जाते हैं। यह भारतवासियों को एक रक्षक की भाँति सुरक्षा प्रदान करता है।

4. जीवन में सुख-दुख को समान भाव से इसलिए स्वीकारना चाहिए क्योंकि सुख और दुख दोनों ही जीवन के हिस्से हैं। व्यक्ति के जीवन में यदि दुख की घड़ी आती है तो उसके बीतने के पश्चात सुख भी आता है। समय एक समान न रहकर परिवर्तित होता रहता है। मनुष्य दुख में इतना दुखी हो जाता है कि उसे सुख का आभास तक नहीं हो पाता तथा सुख की तलाश करने लगता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह अपेक्षित धैर्य धारण कर अपने प्रत्येक क्षण को ज़िंदादिली के साथ जिए।

5. हिमालय की छत्र-छाया में रहने वाला देश हरा-भरा इसलिए है क्योंकि यह कई नदियों का उद्‌गम स्रोत है जिनका जल इसकी छत्र-छाया में रहने वाले देश को सींचता है।

6. हिमालय तथा भारतवासी दोनों ही अटल, अडिग तथा स्थिर रहते हैं। इन दोनों पर ही किसी हिंसा का प्रभाव नहीं होता क्योंकि ये दोनों ही अपने ऊपर हुए आक्रमणों का डटकर सामना करते हैं।

7. हिमालय के चरण छूने वाला वेदों की गाथा इसलिए गाता है क्योंकि हिमालय का अपना इतिहास है तथा ऋषि-मुनियों ने वहाँ निवास करते हुए कई वेदों की रचनाएँ की हैं।

ग. 1. उक्त पंक्तियों का आशय यह है कि हिमालय पर्वत पर किसी प्रकार का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। यहाँ सदैव एक समान मौसम रहता है। यहाँ सूर्योदय तथा सूर्यास्त एक जैसा ही होता है।

2. उक्त पंक्तियों से यह आशय है कि प्रत्येक भारतवासी किसी प्रकार की हिंसा से डरता नहीं अपितु उसका सामना डटकर करता है।

(श्रुतलेख)

विद्‌यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

1. विद्‌यार्थी स्वयं करें।

2. विद्‌यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क. 1. धरा, ज़मीन

2. पर्वतराज, गिरिराज

3 देवनदी, मंदाकिनी

4 जल, वारि

5. सायंकाल, गोधूलि

6. अरुणोदय, सुबह

7. जलधर, पयोधर

8. उदधि, पयोधि

Page-131

ख. 1. महोदय 2. नरेंद्र

3. सूर्योपासना 4. राजर्षि

5. पुरुषोत्तम 6. सप्तर्षि

7. लंबोदर 8. यथेष्ट

ग. 1. अमर 2. अचार

3. अपार

घ. नाता - झुकाता

अविनाशी - भारतवासी

ताज - पर्वतराज

हारे - मारे

सागर - चादर

गाँधी - आँधी

ङ. 1. अं + ब् + अ + र् + अ

2. म् + अ + स् + त् + अ + क् + अ

3. श् + इ + ख् + अ + र् + अ

4. च् + आ + द् + अ + र् + अ

च. 1. धरती - अंबर

2. प्रभात - संध्या

3. पहली - अंतिम

4. दुख - सुख

5. हिंसा - अहिंसा

6. लंबी - छोटी

7. विनाशी - अविनाशी

(कौशल-परीक्षण)

1. देशप्रेम से ओत-प्रोत कविता पढ़कर हमारे मन में देशभक्ति का भाव जाग्रत होता है। देश के प्रति कुछ कर-गुजरने का भाव उत्पन्न होता है।

2. देश के प्रति अपना कर्तव्य निभाकर हम इसके प्रति अपना प्रेम उजागर कर सकते हैं। देश में लागू प्रत्येक नियम का पालन करके हम अपने कर्तव्य की पूर्ति कर सकते हैं। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपनी ज़िम्मेदारी समझकर देश में बने सभी नियमों का पालन करे तो हम अपना देशप्रेम अभिव्यक्त कर सकते हैं। हम जवान के तौर पर सेना में भर्ती होकर भी देश की रक्षा कर सकते हैं।

Page-132 (विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. पर्वत हिमालय हमारा

कितनी सदियाँ बीत चुकी हैं,

एक जगह खड़ा हिमालय रखवाली का वचन निभाए, कर्तव्यों की कथा सुनाए।

अविचल और अडिग रहकर नित, मुसकानों के कोष लुटाए।

भारत माता के मस्तक पर लगे मुकुट-सा जड़ा हिमालय।

दुश्मन का मुख काला करता, जन-जन की पीड़ा को हरता।

गंगा की धारा को लाए, परहित में ही जीता रहता।

गर्व हमें है पिता सरीखा ले मुकाबला अड़ा हिमालय।

कितनी सदियाँ बीत चुकी हैं, एक जगह पर खड़ा हिमालय।

3. विद्यार्थी स्वयं करें।

4. पर्वत : हे मानव! हमने सदैव तुम्हारे हित की कामना की है।

मानव : हाँ, यह तो तुम सत्य कह रहे हो।

पर्वत : यदि तुम्हें यह बात सत्य प्रतीत होती है तो तुम पहाड़ी क्षेत्रों में अपने स्वार्थ हेतु परिवर्तन क्यों करते जा रहे हो?

मानव : ऐसा हम इसलिए कर रहे हैं ताकि हमारी आय के स्रोत में वृद्धि हो सके।

पर्वत : क्या तुम नहीं जानते कि ऐसा करके तुम अपना ही विनाश कर रहे हो। दो वर्ष पूर्व केदारनाथ समेत उत्तराखंड के कुछ स्थानों में आई आपदा इसी परिवर्तन हेतु तुम्हें दी गई एक चेतावनी भर थी।

मानव : किंतु हम भी बेबस हैं, हम इसमें क्या कर सकते हैं?

पर्वत : मानव, तुम अपनी आय के स्रोत में वृद्धि करो, किंतु प्रकृति से बिना छेड़छाड़ किए।

मानव : तुम ठीक कहते हो पर्वत, मैं अवश्य ही इसका ध्यान रखूँगा।

5. विद्यार्थी स्वयं करें।

6. अध्यापक विद्यार्थियों से स्वयं करवाएँ।

14 मातृभूमि का मान

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-142 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. अभयसिंह बूँदी के राव के पास मेवाड़ की अधीनता स्वीकार करने का प्रस्ताव देने आए थे।
2. राव हेमू ने अभयसिंह को यह उत्तर दिया कि हाड़ा-वंश किसी की गुलामी स्वीकार नहीं करेगा। चाहे वह विदेशी शक्ति हो, चाहे वह मेवाड़ का महाराणा हो। बूँदी स्वतंत्र राज्य है और स्वतंत्र रहकर वह महाराणाओं का आदर कर सकता है। अधीन होकर किसी की सेवा करना वह पसंद नहीं करता।
3. महाराणा लाखा चित्तौड़ के महाराजा थे। नीमरा के मैदान में बूँदी के राव हेमू से पराजित होकर वे वहाँ से अपनी सेना सहित भाग खड़े हुए थे, तब से उनकी आत्मा उन्हें धिक्कार रही थी। इस आत्मग्लानि के भाव के कारण ही वे दरबार में जाना नहीं चाहते थे।
4. चारणी ने महाराणा को उपाय बताया कि वह यहीं पर बूँदी का नकली दुर्ग बनवाएँ और फिर उसका विध्वंस करके अपनी प्रतिज्ञा को पूरी कर लें।
5. इस नाटक से हमें यह शिक्षा मिलती है कि जन्मभूमि के मान की रक्षा के लिए यदि कोई सपूत प्राणों की बलि दे जाए तो शत्रु भी उसके देशप्रेम के समक्ष नत-मस्तक हो जाता है।

Page-143 (लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. द 2. अ

3. ब 4. ब

ख. 1. अभयसिंह जानते थे कि हाड़ा लोग कितने वीर हैं। युद्ध करने में वे यम से भी नहीं डरते थे। इसमें संदेह नहीं था कि अंतिम विजय उनकी ही होगी किंतु यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता था कि इसमें कितने दिन लग जाएँगे। इसलिए वे महाराणा लाखा को भीषण प्रतिज्ञा करने से रोकना चाहते थे।

2. नीमरा के मैदान में बूँदी के राव हेमू और मुट्ठी भर हाड़ाओं ने जिस तरह महाराणा लाखा को पराजित किया और उन्हें अपनी सेना समेत वहाँ से भागना पड़ा, तब से उनकी आत्मा उन्हें धिक्कार रही थी। महाराणा लाखा सोचते थे कि जिसकी धमनियों में बाप्पा रावल और वीरवर हम्मीर का रक्त बह रहा हो, उसके लिए प्राण ों के भय से युद्ध भूमि से भागना

कितने कलंक की बात है। उन्हें लग रहा था कि उनके इस कृत्य से मेवाड़ के आत्म गौरव को उन्होंने काफ़ी ठेस पहुँचाई है और मेवाड़ के गौरवपूर्ण इतिहास को कलंकित कर दिया है।

3. अभयसिंह महाराणा लाखा को यह तर्क देकर सांत्वना दे रहे थे कि आप ज़रा-सी बात के लिए इतना शोक क्यों कर रहे हैं। हाड़ाओं ने रात के समय अचानक हमारे शिविर पर आक्रमण किया था। इस आकस्मिक धावे से घबराकर हमारे सैनिक वहाँ से भाग खड़े हुए। ऐसे में आप तो तब भी अपने प्राणों पर खेलकर राव हेमू से लोहा लेना चाहते थे किंतु हम सभी आपको वहाँ से खींच लाए थे। इसमें आपका कोई अपराध नहीं है और न ही मेवाड़ के गौरव में कमी आने का कोई कारण है।

4. जब-जब मेवाड़ की स्वतंत्रता पर आक्रमण हुआ तब-तब वीरसिंह और उनके साथियों ने अपनी तलवार से शत्रु का डटकर सामना करके अपने नमक का बदला भी दिया। लेकिन जब बात उनकी मातृभूमि के सम्मान की आई तो उन्होंने मेवाड़ की दी हुई तलवारें महाराणा के चरणों में चुपचाप रखकर विदा लेने और बूँदी की ओर से प्राणों की बलि देने का फैसला लिया।

5. महाराणा लाखा को बूँदी के दुर्ग को अपने अधीन करने के निश्चय के लिए पश्चाताप करना था जिसके लिए उन्होंने अन्न-जल ग्रहण न करने की प्रतिज्ञा ली थी। उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा को पूरी करने के लिए बूँदी का नकली दुर्ग बनवाया और उस पर विजय प्राप्त करने के लिए मौत का खेल खेला जिससे बूँदी के नकली दुर्ग पर विजय पताका तो फहर गई लेकिन वीरसिंह की वीरता ने उनके हृदय के द्वार खोल दिए। उनकी आँखों से परदा हट गया और उन्हें अहसास हो गया कि ऐसी वीर जाति को अधीन करने की अभिलाषा करना उनका पागलपन था। वे शहीद वीरसिंह के चरणों के पास बैठकर अपने अपराध के लिए क्षमा माँगने लगे।

ग. 1 वीरसिंह ने अपने साथियों से कहा।

2. महाराणा ने अभयसिंह से वीरसिंह और उसके साथियों के संदर्भ में कहा नकली बूँदी के सम्मान की रक्षा के लिए भी अपने प्राणों की बलि देने को तैयार थे।

3. महाराणा ने स्वयं से कहा।

4. राव हेमू ने महाराणा लाखा से कहा।

Page-144 (श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क.

1.	अनादर	2.	विघटित
3.	असफल	4.	अपयश
5.	विध्वंस	6.	अनावश्यक
7.	बेसहारा	8.	अनिश्चय

ख. 1. गोले के वार से वीरसिंह के प्राण-पखेरू उड़ गए।

2. जाओ, दुर्ग पर मेवाड़ की पताका फहराओ।

3. बूँदी आप जैसे पुत्रों को पाकर फूली नहीं समाती।

4. दरबार के सभासद आपके दर्शन पाने को उत्सुक हैं।

5. शीघ्र ही बूँदी के पठारों पर सिसोदियों का सिंहनाद होगा।

6. महाराज, आप उस नकली दुर्ग को विध्वंस करके अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर लें।

ग.

	उद्देश्य	विधेय
1.	हम लोग	महाराणा के नौकर हैं।
2.	मैं	दरबार में नहीं जाऊँगा।
3.	हाड़ाओं ने	रात के समय अचानक हमारे शिविर पर आक्रमण कर दिया।
4.	मुझे	आप लोगों पर अभिमान है।
5.	इस विजय में	मेरी सबसे बड़ी पराजय हुई है।

Page-145

घ.

1.	आदरणीय	2.	ऐतिहासिक
3.	जातिगत	4.	आश्रित
5.	खेलना	6.	पुरुषत्व

ङ.

1.	अनु+शासन	2.	अप+यश
3.	वि+देशी	4.	सम्+पूर्ण
5.	वि+फल	6.	निर्+दोष
7.	दुर्+घटना		

च.

1. महाराणा की प्रतिज्ञा <u>तो</u> पूरी होनी ही चाहिए।
2. यह मेरा <u>ही</u> हृदय जानता है।
3. महाराणा जब <u>तक</u> बूँदी के गढ़ को जीत न लेंगे, अन्न-जल ग्रहण न करेंगे।
4. आप तो तब <u>भी</u> प्राणों पर खेलकर राव हेमू से लोहा लेना चाहते थे।
5. हिंसा से मानव <u>मात्र</u> का भला नहीं होगा।

(कौशल-परीक्षण)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. अध्यापक विद्यार्थियों से स्वयं चर्चा कराएँ।

Page-146 (विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. देशप्रेम का अर्थ है– देश से लगाव या देश के प्रति अपनापन। व्यक्ति जिस देश में जन्म लेता है, जिसमें रहता है, उसके प्रति लगाव होना स्वाभाविक है। सच्चा देशप्रेमी अपने देश के लिए अपना तन-मन अर्पित कर देता है। देशप्रेम एक पवित्र भावना है तथा निस्वार्थ प्रेम है। देश के लिए न्योछावर हो जाने से बढ़कर और कोई गौरव नहीं है। भारत में शिवाजी, महाराणा प्रताप, रानी लक्ष्मीबाई, सरोजिनी नायडू, तिलक, गोखले, आज़ाद, सुभाष जैसे देशभक्त हुए हैं। देशप्रेम की भावना धन-दौलत, समृद्धि, सुख, वैभव आदि में सबसे ऊपर है। भगवान राम ने भी लंका विजय के बाद लक्ष्मण से कहा था–हे लक्ष्मण! ये सोने की लंका भी मुझे स्वदेश से अच्छी नहीं लगती। अपनी धरती माँ और अपनी जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान होती है। देशप्रेम वह धागा है जिससे राष्ट्र के सभी मोती आपस में गुँथे रहते हैं, सभी जन देश से जुड़े रहते हैं। बड़ी-से-बड़ी विपत्ति भी देशप्रेम को देखकर निष्फल हो जाती है। प्राकृतिक विपदाएँ– बाढ़, तूफ़ान, महामारी, युद्ध या और कोई संकट भी देशप्रेम की ढाल पर झेला जा सकता है।

2. विद्यार्थी स्वयं करें।

3. विद्यार्थी स्वयं करें।

4. (i) मिटें सीमाएँ देश की बने एक परिवार,
फिर देखो एकता का चमत्कार।

(ii) न पाल हिंदू-मुस्लिम का बैर,
माँ के प्यार को न बना इतना गैर।
उसके दिल में सभी समान हैं,
सब मिलकर रहें इसी में उसकी शान है।

5. विद्यार्थी स्वयं करें।

6. अध्यापक विद्यार्थियों से स्वयं कराएँ।

15 बात तो तब है, जब आप बिक जाएँ...!

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-150 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. प्रस्तुत साक्षात्कार अकु श्रीवास्तव द्वारा लिया गया है।
2. नागार्जुन को घुमक्कड़पन इसलिए प्रिय है क्योंकि यह उन्हें आगे जीने की इच्छा देता है।
3. नागार्जुन की रचनाएँ हैं– वरुण के बेटे, रतिनाथ की चाची, इमरतिया, जन्मतिया का बाबा एवं कुंभीपाक आदि।
4. बाबा नागार्जुन ने अपनी कविता में इंदिरा गांधी की जमकर आलोचना की और बाद में उन्हीं के हाथों भारत-भारती पुरस्कार भी ग्रहण किया, इसी बात से रुष्ट होकर साहित्यकारों ने नाक-भौं सिकोड़ीं।
5. नागार्जुन ने गद्य की तरफ़ कम ध्यान इसलिए दिया क्योंकि यह उनकी प्रकृति के विरुद्ध जाता है।

(लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. द 2. ब
3. स 4. ब

Page-151

ख. 1. बाबा नागार्जुन के द्वारा इंदिरा गांधी की जमकर आलोचना करना तथा बाद में उन्हीं के हाथों पुरस्कार ग्रहण करने जैसे विरोधाभास का कारण उन्होंने यह बताया कि जर्जर शासन व्यवस्था के खिलाफ़ कविताएँ लिखना मेरा धर्म है। शासन किसी का भी हो, अगर वह समाज के अनुकूल नहीं है तो मेरा विरोध मुखर रहेगा। रही बात पुरस्कार की, तो वह जनता का पैसा है। उसने कर दिया है। अगर वह मुझे मिला तो बुराई क्या है! संस्थान मेरे तेवर जानता था। उसके बावजूद उसने मुझे पुरस्कार दिया तो लेने में बुराई क्या है! फिर शासन से हमें कई चीज़ें मिलती हैं। बात तो तब है, जब आप बिक जाएँ, आपके तेवर भिन्न हो जाएँ! पर मेरे तेवर पुरस्कार प्राप्त होने के बाद भी बदले नहीं। चाहे वह कोई भी सरकार हो, मेरा विरोध सरकार से है।

2. वर्तमान सामाजिक हालात पर बाबा नागार्जुन ने यह टिप्पणी दी कि समाज में हमारे सामने एक युगीन संकट है। सामाजिक प्रक्रियाएँ कम हो गई हैं। वजह है कि जनता दो जून की रोटी में लगी है। उसे रोटी की चिंता है। उसे आपसी झगड़े की चिंता है। उसे ग्यारह महीने बाद मकान खाली करने की चिंता है। उसे बेटे के रोज़गार की चिंता है। ये सब हमें धीरे-धीरे और विरासत में पूर्व सरकार ने थाली में परोसकर दिए हैं। उनकी खाई को और चौड़ा किया है। फिर इस समय समाज में हो रही विचित्र उथल-पुथल कोई समीकरण बनने नहीं दे रही। चुनाव में मेल-मिलाप के समीकरण कुछ ज़रूर दिखते हैं पर तत्काल बाद बिखर जाते हैं। दूसरी ओर हमें दिखावा खाए जा रहा है। आज लोगों की प्राथमिकताएँ बदली हैं। रुचियाँ विकृत हुई हैं। साहित्यिक गतिविधियाँ कम हुईं और साहित्यिक रुझान कम हुआ है।

3. बाबा नागार्जुन को साहित्य रचने की प्रेरणा अपनी घुमक्कड़ प्रवृत्ति से, युवाओं से, गरीबों से, मजदूरों से तथा बच्चे-बूढ़ों के दर्द से मिलती है।

4. कविता की भाषा को लेकर नागार्जुन कवि के विचार ये हैं कि हमें जनता की भाषा में लिखना चाहिए क्योंकि ऐसी कविताओं को जनता समझती तथा सुनती भी है।

5. भविष्य के बारे में नागार्जुन यह आशा रखते हैं कि युवा कुछ करेंगे क्योंकि वे तकनीक की ओर बढ़ रहे हैं। उन्हें राजनीति से वितृष्णा हो रही है। तकनीक के आने से स्वरोज़गार पनपेगा तथा बेरोज़गारी खत्म होगी।

ग. 1. 'बात तो .... जाएँ!' से आशय है कि नागार्जुन कवि ने इंदिरा गांधी जी से पुरस्कार प्राप्त करने के पश्चात भी उनके शासन की आलोचना करने में कोई कमी नहीं की। यदि उनके शासन की बातें उन्हें समाज के अनुकूल नहीं लगीं तो उनका विरोध जारी रहा। पुरस्कार प्राप्त करने के पश्चात भी उनका स्वर उसी तरह तेज़ बना रहा जैसा पुरस्कार प्राप्त करने से पूर्व था।

2. 'दूरदर्शन .... गया है।' का आशय यह है कि दूरदर्शन के आने से साहित्यिक गतिविधियाँ प्रभावित हुई हैं। जहाँ लोग पहले अपने समय का सदुपयोग पढ़ने-लिखने में करते थे वहीं अब वे दूरदर्शन के कार्यक्रमों को देखने में समय को व्यर्थ गँवाते हैं।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क. 1. शर्माना 2. बतियाना
3. हथियाना 4. अपनाना
5. गपियाना 6. लँगड़ाना
7. चिकनाना 8. दोहराना

Page-152

ख. 1. वर्तमान समय का
2. प्रतिमूर्ति / किसी के स्थान पर कार्य करने वाला
3. आचार-व्यवहार
4. दिखाया गया
5. शक्ति
6. अरुचि

ग. 1. निश्चयवाचक सर्वनाम
2. पुरुषवाचक सर्वनाम
3. निश्चयवाचक सर्वनाम
4. निजवाचक सर्वनाम

घ. 1. गाँव, संकट
2. मिश्रित वाक्य
3. आपके घर में टी.वी. कितना चलता है?
4. तो

ङ. 1. वे वस्तुएँ जो मनुष्य के दैनिक जीवन में उसे आराम देती हैं, उन सभी वस्तुओं को भौतिक वस्तुओं की श्रेणी में रखा जाएगा।
2. मनुष्य के भीतर बैठे नैतिक मूल्य जैसे आंतरिक गुण की बात की गई है।
3. लोभ, मोह, काम, क्रोध जैसे मनोविकार मनुष्य के भीतर स्वाभाविक रूप से विद्यमान हैं।
4. मनुष्य के भीतर विद्यमान मनोविकारों को प्रधान शक्ति मानकर बुद्धि को उन मनोविकारों के इशारे पर छोड़ने को निकृष्ट आचरण कहा गया है।

Page-153 (कौशल-परीक्षण)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. विद्यार्थी स्वयं करें।
3. विद्यार्थी स्वयं करें।
4. अध्यापक विद्यार्थियों से स्वयं कराएँ।
5. विद्यार्थी स्वयं करें।

16 वह देश कौन-सा है?

(अभ्यास-उत्तर)

काव्य-बोध

Page-156 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. इस कविता के कवि रामनरेश त्रिपाठी हैं।
2. भारत के चरण समुद्र धो रहा है।
3. हिमालय को भारत का मुकुट कहा गया है।
4. कवि ने भारत देश की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई हैं–
   - यह मन को मोहित करने वाली प्रकृति की गोद में बसा है।
   - यहाँ स्वर्ग जैसा सुख है।
   - इसका मुकुट हिमालय है।
   - यहाँ पवित्र नदियाँ बहती हैं।
   - विभिन्न प्रकार के फलों से यहाँ के सभी आँगन सजे हैं।
   - यहाँ मैदानी एवं पर्वतीय क्षेत्रों तथा वनों में हरियाली देखने को मिलती है।
   - यहाँ ज्ञान का सूर्योदय सर्वप्रथम हुआ है।
   - यहाँ देवता भी मानव रूप में अवतरित होने को लालायित रहे हैं।
   - भारत जैसे देश में ही पितृ आज्ञा के पालन हेतु श्री राम ने राजसिंहासन का त्याग किया तथा उनके भाइयों ने भ्रातृ-प्रेम की मिसाल कायम की।

(लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. ब 2. स
3. अ 4. स

Page-157

ख. 1. भारत की नदियों की विशेषता यह है कि इन नदियों में अमृत के समान पवित्र जल बहता है। ये नदियाँ धरती को सींचती हैं तथा इन नदियों के जल से सींची गई भूमि में रसीले फल लगते हैं।

2. वह देश भारत है। कवि के इस प्रश्न का उत्तर ऐसे लोग दे सकते हैं जिनके भीतर भारत देश के प्रति अपार श्रद्धा विद्यमान है, जो देश के प्रति समर्पण का भाव रखते हैं तथा जो देशप्रेम से ओत-प्रोत हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे सर्वोच्च स्थान पर देश को रखते हैं तथा उसके बाद ही अन्य किसी के बारे में सोचते हैं।

3. विश्व का ज्ञान गुरु भारत को माना गया है क्योंकि प्राचीन काल से ही हमारे देश के ऋषि-मुनि विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञान की खोज में रत रहते थे। उनका मस्तिष्क सर्जनात्मक और बहुआयामी था। उनके क्षेत्रों में संसार को उनकी कई महत्वपूर्ण देनें हैं, जिसके लिए पूरा विश्व तथा समाज आज भी उनका ऋणी है।

4. श्रीराम के भाई भरत, शत्रुघ्न तथा लक्ष्मण थे। तीनों में मानवीय एवं

सामाजिक गुण विद्यमान थे। तीनों ही प्रत्येक कला में निपुण थे चाहे वह मल्लयुद्ध हो या धनुर्विद्या। अपने बड़े भ्राता श्रीराम के प्रति तीनों के भीतर आदर का भाव था।

5. कवि ने भारत के सेवक, सपूत भाई चालीस करोड़ बताए हैं।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. रानी कैकेयी अयोध्या के राजा दशरथ की प्रिय पत्नी थीं। उनके पुत्र का नाम भरत था। वे राजा दशरथ के साथ युद्ध में भी भाग लेने जाती थीं। अपने पुत्र को राजसिंहासन पर बैठाने की इच्छा से उन्होंने मंथरा द्वारा भड़काए जाने पर राजा दशरथ से राम को वनवास भेजने का वचन माँगा था।

(भाषा-ज्ञान)

क. 1. निरंतर 2. जहाँ
3. अनंत 4. हरियालियाँ
5. नदियाँ 6. चाँद

ख. 1. अशिक्षित 2. अशुद्ध
3. अन्याय 4. कपूत
5. नरक 6. दुर्गंध

ग. 1. सजल 2. सगुण
3. सविनय

घ. 1. गुणवाचक विशेषण
2. अधिकरण कारक
3. **अ.** अमृत **ब.** पीयूष, अमिय
4. द्वंद्व समास

Page-158 (कौशल-परीक्षण)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. विद्यार्थी स्वयं करें।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. अध्यापक विद्यार्थियों से स्वयं कराएँ।
2. विद्यार्थी स्वयं करें।
3. विद्यार्थी स्वयं करें।

वार्षिक परीक्षा प्रश्न-पत्र–4

खंड 'अ'

Page-161

क. **1.** निर्धनता को लोग अभिशाप समझते हैं।

2. संसार में एक बड़ी विचित्रता यह है कि जितने बड़े आदमी हुए हैं, वे सभी निर्धन कुल में जन्म हैं। उन्होंने परिश्रम तथा विपरीत परिस्थितियों से लड़ते हुए संसार में अपनी पहचान बनाई गई है।

3. निर्धनता से आवश्यकता की उत्पत्ति हुई है।

4. निर्धनता लोगों को परिश्रम करने का, परिस्थिति से लड़ने का, कर्मक्षेत्र में अपनी योग्यता दिखाने का मौका देती है।

5. निर्धनता उन लोगों के लिए आशीर्वाद है, जो वीर, साहसी है, उद्योगी और कर्मशील हैं तथा ऐसे लोगों के लिए अभिशाप है, जो आलसी हैं, कायर हैं, काम से दिल चुराने वाले हैं।

ख. **1.** कविता में भिक्षुक का वर्णन किया गया है।

2. पेट-पीठ दोनों मिलकर एक होने का अर्थ है कि उन्हें कई दिनों से भोजन नहीं खाया है। वे भूखे हैं।

3. फटी-पुरानी झोली का मुख भिक्षुक फैलाता है कि शायद कोई रहम

करके उसकी झोली में कुछ खाने के लिए अनाज या पैसा डाल दें।

खंड 'ब'

Page-162

ग. 1. शिखर – श् + इ + ख् + अ + र् + अ

2. अमर – अ + म् + अ + र् + अ

3. चादर – च् + आ + द् अ + र्

घ. 1. अहिंसक 2. निराश्रय

3. अस्त

ङ. 1. गाँव 2. गिरि

3. महिला

च. 1. शिशुता/शैशव 2. राष्ट्रीयता

3. भूख

छ. 1. **अ.** समुदायवाचक संज्ञा

ब. जातिवाचक संज्ञा

स. व्यक्तिवाचक संज्ञा

2. **अ.** आदरणीय

ब. ऐतिहासिक

3. **अ.** गुणवाचक विशेषण

ब. सार्वनाभिक विशेषण

स. संख्यावाचक विशेषण

4. बेच चुका था।

5. **अ.** सफेद झूठ बोलना– साफ-साफ झूठ बोलना।

राजेंद्र को सफेद झूठ बोलने की आदत है।

ब. तल रखने की जगह न होना–भीड़ होना।

शाम के वक्त बाजारों में तिल रखने की जगह नहीं रहती ताकि कोई आ-जा सके।

स. हवाइयाँ उड़ना– घबरा जाना

अशोक ने जब परीक्षा भवन से परीक्षा देकर आया तो उसके चेहरे से हवाइयाँ उड़ रही थीं।

6. **अ.** सरल वाक्य

ब. मिश्रित वाक्य

स. संयुक्त वाक्य

7. **अ.** (i) एक प्रकार रत्न,

(ii) सो जाना

ब. संस्कृत के ब्राह्मण, विद्वान, चंद्रमा, वैश्य

खंड 'स'

Page-163

ज. 1. प्रस्तुत गद्यांश के पाठ का नाम 'नाच का संसार' है। इसके लेखक रामवृक्ष बेनीपुरी है।

2. पुराने धर्म में नाचने को पूजा का एक उत्तम रूप समझा जाता था।

3. चैतन्य देव के अनुयायी अपने इष्ट देव के ध्यान में इतना नाचते और बेहोश होने पर गर्व महसूस करते थे।

4. 'भक्ति की हद' से तात्पर्य है कि ऐसा भक्त जो इष्टदेव के ध्यान में इतना अधिक रम जाता है कि उसे दुनिया की सुध नहीं रहती। उसका मन ईश्वर में लीन हो जाता है और नाचते-नाचते बेहोश हो जाने में ही अपनी भक्ति की हद समझता है।

5. उत्तरी अमेरिका के इंडियन सूर्य नृत्य करते हैं। इसमें नाचने वाला भक्त सूर्य की ओर एकटक देखते हुए नृत्य करता है और नाचते-नाचते ऐसा मस्त हो जाता है कि अपने शरीर के मांस को नोच फेंकता है।

झ. 1. कवि का नाम गोपाल सिंह नेपाली और कविता का नाम 'हिमालय और हम' है।

2. पद्यांश में हिमालय पर्व के संबंध मं बात की गई है।

3. धरती का ताज हिमालय पर्व को कहा गया है।

4. भ्रमर का वर्ण-विच्छेद–

भ् + र् + अ + म् + अ + र् + अ

5. 'इसकी छाया में जो भी है, वह मस्तक नहीं झुकाता है।' इनकी पंक्ति का तात्पर्य है कि हिमालय पर्व हमें हर परिस्थिति में जूझने की शक्ति देता है।

Page-164

ञ. 1. अपने विरुद्ध युद्ध होने पर भी महाराणा लाखा ने वीरसिंह की प्रशंसा उसकी साहस एवं मातृभूमि के प्रति प्रेम को लेकर की थी। जिसने नकली बूँदी के किले की रक्षा के लिए प्राण गवाँ दिए और जीते जी चित्तौड़ की पताका फहराने नहीं दी।

2. थाईवासी भारतीय सभ्यता से परिचित हैं यह इन बातों से ज्ञात होता है कि अलकाजार केबरेट कार्यक्रम के दौरान लेखिका को एक जगह हिंदी फ़िल्मी गीत पर नृत्य की प्रस्तुति से देश का आभास हुआ; वहीं थाई लोग वहाँ आने वाले हिंदुस्तानी पर्यटकों के कारण हिंदी सीखने में रुचि लेते हैं तथा विदेश में भी राजमा-चावल और पंजाबी खीर से भारतीयता का अहसास होता है।

3. अभयसिंह महाराणा लाखा को यह तर्क देकर सांत्वना दे रहे थे कि आप जरा-सी बात के लिए इतना शोक क्यों कर रहे हैं। हाड़ाओं ने रात के समय अचानक हमारे शिविर पर आक्रमण किया था। इस आकस्मिक धावे से घबराकर हमारे सैनिक भाग खड़े हुए। ऐसे में आप तो तब भी अपने प्राणों पर खेलकर राव हेमू से लोहा लेना चाहते थे किंतु हम सभी आपको वहाँ से खींच लाए थे। इसमें आपका कोई अपराध नहीं है और न ही मेवाड़ के गौरव में कमी आने का कोई कारण है।

4. संसार भर के सभ्य देशों में नृत्य से जुड़ी हुई यह विचित्र प्रवृत्ति देखी जा रही है कि वे अपनी पुरानी नृत्य कला के उद्धार में लगे हुए हैं। सभ्य शिरोमणि इंग्लैंड में इसके लिए बड़ा प्रयत्न हो रहा है कि वहाँ के पुराने देहाती नामों का सभ्य लोगों में भी प्रचार किया जाए। हमारे देश में भी ऐसा प्रयत्न शुरू हुआ है। संसार को भारतीय कला पर गुग्ध कराने वाले नटराज उदयशंकर ने इसके लिए बहुत कुछ किया है। कवींद्र-रवींद्र के शांति निकेतन में भी प्राचीन नृत्यों के उद्धार के लिए पूरी चेष्टा हो रही है। अब सभ्य घराने की स्त्रियाँ भी नाचने की ओर झुकी हैं।

5. पंचों की निगाह पर गोधन बहुत दिन से चढ़ा हुआ था। दूसरे गाँव से आकर बसा है गोधन, और अब तक टोले के पंचों को पान-सुपारी खाने के लिए भी कुछ नहीं दिया। परवाह ही नहीं करता है। बस, पंचों को मौका मिला। दस रुपया जुरमाना! न देने पर हुक्का-पानी बंद।

ट. जाकर चित अहि ....भलाई।

ये पंक्तियाँ 'तुलसीदास की चौपाइयाँ' से ली गई हैं। इनमें तुलसीदास जी ऐसे मित्रों से दूर रहने में भलाई समझते हैं जिनके मन में सर्प के समान जहर भरा हुआ हो अर्थात वह मन में तो दुष्टता का भाव रखता है और सामने मधुर वचन बोलता है। वे कहते हैं कि ऐसे मित्रों से मित्रता नहीं रखनी चाहिए।

अथवा

छोड़ा स्वराज .... कौन-सा है?

उपर्युक्त पंक्तियाँ 'वह देश कौन-सा है?' में से ली गई हैं। इसमें कविवर रामनरेश त्रिपाठी जी भारत देश का गुणगान करते हुए लिखते हैं कि विश्व में भारत ही ऐसा देश है जहाँ पर श्रीराम ने पितृ आज्ञा के पालन हेतु राजसिंहासन का त्याग कर दिया। विश्व में ऐसा उदाहरण कहीं भी देखने को नहीं मिलता। अपितु राजसिंहासन के लिए युद्ध हो जाते थे।

ठ. 1. मित्र 2. खाली

3. ईश्वरीय शक्ति

ड. 1. पंचलाइट के लेखक फणीश्वर नाथ 'रेणु' है।

2. संसार का शिरोमणि देश भारत है।

3. थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक हैं।

4. गुजराती स्त्रियों का विश्व प्रसिद्ध नृत्य गरबा नृत्य है।

5. थाईलैंड की करेंसी का नाम 'बाहत' है।

खंड 'द'

ढ. विद्यार्थी स्वयं करें।

ड. विद्यार्थी स्वयं करें।